Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ

(ऐराफ़ : 206)

(तर्जुमा) : और तू अपने रब को अपने दिल में कभी गिड़गिड़ाते हुए और कभी डरते डरते और बग़ैर आवाज़ किए सुबह और शाम के समय याद किया कर और ग़ाफ़िलों में से न हो

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-3

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

26 जमादिउल सानी 1444 हिज्री कमरी, 19 सुलह 1402 हिज्री शम्सी, 19 जनवरी 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

"...अल्लाहु-अकबर इन दोनों (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो) के सिदक़-ओ-ख़ुलूस की क्या बुलंद शान है। वे दोनों ऐसे (मुबारक) मदफ़न में दफ़न हुए कि अगर मूसा और ईसा ज़िंदा होते तो ब-सद रशक वहां दफ़न होने की इच्छा करते"

"पहले ख़लीफ़ा की याद मुस्लमानों में हमेशा एक ऐसे इन्सान के तौर पर रही है जो कामिल वफ़ादार, लुतफ़-ओ-करम का पैकर था और कोई सख़्त से सख़्त तूफ़ान भी उनकी मुस्तक़िल तहम्मुल मिज़ाजी को हिला न सका"(जे. जे. सानडरज़)

"जब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहांत हुआ तो अबू बकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा और जांनशीन बने और पहाड़ों को भी हिला देने वाले ईमान के साथ उन्होंने बड़ी सादगी और समझदारी से तीन या चार हज़ार अरबों पर मुश्तमिल छोटी छोटी सी फ़ौज के साथ सारी दुनिया को अल्लाह के ताबे बनाने का काम शुरू किया" (एच.जे. वेल्ज़)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो या हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ये सब अपने आक़ा-ओ-मुता हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वफ़ादार और कामिल अनुसरण करने वाले आशिक़ थे

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी बादशाह हुए लेकिन उनमें विनम्रता थी, इंकेसारी थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते थे मुझे ख़ुदा तआला ने लोगों की ख़िदमत के लिए निर्धारित किया है। और ख़िदमत के लिए जितनी मोहलत मुझे मिल जाए उस का एहसान है

"...वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर का ग़ुलाम हो गया तो उसकी हर चीज़ हमें प्यारी लगने लग गई और अब यह मुम्किन ही नहीं कि कोई शख़्स इस अज़मत को हमारे दलों से मिटा सके।"

हमारे पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीन करते हैं लेकिन हमारे ये ख़्यालात हैं

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाक तालीम ने उस को तुरंत प्रभावित करके रोशन कर दिया। उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई बेहस नहीं की। कोई निशान और चमत्कार नहीं मांगा। तुरंत सुनकर केवल इतना ही पूछा कि क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबुव्वत का दावा करते हैं। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हाँ। तो बोल उठे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गवाह रहें। मैं सबसे पहले ईमान लाता हूँ

"जो शख़्स उनकी अज़मत से इंकार करता है और उनके अकाट्य तर्क को हक़ीर जानता है और उनके साथ अदब से पेश नहीं आता बल्कि उनका अपमान करता औरउन को बुरा भला कहने के दर पर रहता और ज़बान दराज़ी करता है मुझे उसके बद-अंजाम और ईमान नष्ट होने का डर है"

"क्या कोई मोमिन यह ख़्याल कर सकता है कि वह शख़्स जो इस्लाम के लिए प्रथम बुनियादी ईंट था वह काफ़िर और झूठा था? फिर वह कि जिसने निबियों के सरदार के साथ सबसे पहले हिज्रत की वह बेईमान और मुर्तद था?

इस तरह तो हर फ़ज़ीलत काफ़िरों को हासिल हो गई। यहां तक कि संयमियों के सरदार की क़ब्र की हम-साएगी भी!"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा रराशिद हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 दिसम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

वर्णन हो रहे थे। इस सिलसिला में उनका लोगों में सबसे बेहतर और महबूब होने के बारे में लिखा है। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में हम लोगों में से एक को दूसरे से बेहतर क़रार दिया करते थे। मुक़ाबला होता था कि कौन बेहतर है दूसरे से। और उस वक़्त समझते थे कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो सबसे बेहतर हैं, फिर हज़रत उमर बिन खत्ताब, फिर हज़रत उस्मान बिन अफान रज़ियल्लाहु अन्हो

(सही बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब फ़ज़ल अबी बकर बाद नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हदीस नंबर 3655)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि ए लोगों में सबसे बेहतर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तारीफ़ की तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अगर तुम ऐसा कहते हो तो मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि सूरज तलूअ नहीं हुआ किसी आदमी पर जो उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से बेहतर हो। (सुंन अल् तिरमिज़ी किताब अल् मनाकिब बाब فی مناقب عمر بن الخطاب हदीस 3684) अर्थात आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौरन अपनी विनम्रता का इज़हार फ़रमाया कि मुझे कहते हो तुम बेहतर हो हालाँकि मैंने तो तुम्हारे बारे में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना हुआ है कि तुम बेहतर हो।

अब्दुल्लाह बिन शफ़ीक़ ने वर्णन किया कि मैं ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से कौन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सबसे ज़्यादा महबूब था तो उन्होंने फ़रमाया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो। मैं ने कहा फिर कौन? फ़रमाया हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो। मैं ने कहा फिर कौन? फ़रमाया फिर हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हो।

वह कहते हैं कि मैंने कहा फिर कौन? फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हा ख़ामोश रहीं

(सुंन अल् तिरमिज़ी किताब अल् मनाकिब बाब बकर सिद्दीक हदीस नंबर : 3657)

मुहम्मद बिन सीरियन ने वर्णन किया कि मैं उस शख़्स के बारे में गुमान नहीं करता जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तन्क़ीस वर्णन करता अर्थात उनमें नुक़्स निकालता है और वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखता हो। (सुंन अल् तिरमिज़ी किताब فی مناقب عمر بن الخطاب हदीस नंबर : 3685) और फिर यह भी साथ दावा हो कि मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो में नुक़्स निकालने के बाद यह दावा ग़लत है कि फिर उनको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत है क्योंकि ये दोनों आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बड़े प्यारे थे।

हज़रत आयज़ बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो चंद लोगों के मध्य बैठे हुए थे कि अबूसुफ़ियान आए। इस पर उन लोगों ने कहा कि अल्लाह की क़सम अल्लाह की तलवारों ने अल्लाह के दुश्मन की गर्दन के साथ अभी तक अपना हिसाब चुकता नहीं किया। अर्थात सही तरह जो बदला लेना चाहिए था वह नहीं लिया। रावी कहते हैं यह सुनकर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा क्या तुम क़ुरैश के बड़े सरदारों के बारे में इस तरह कह रहे हो? अबूसुफ़ियान भी क़ुरैश के सरदारों में से हैं। तुम कह रहे हो कि उनसे हमने बदला नहीं लिया। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात बताई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बकर! शायद तुमने उन लोगों अर्थात सलमान, सुहैब और बिलाल को नाराज़ कर दिया। अगर तुमने उन्हें नाराज़ किया तो समझ लो कि तुमने अपने रब को नाराज़ किया। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इन तीनों हज़रात के पास आए और कहा प्यारे भाइयों क्या मैंने आपको नाराज़ कर दिया? बड़ी क्षमा याचना के अंदाज़ में यह कहा। तो उन्होंने कहा नहीं ऐसी कोई बात नहीं है हे हमारे भाई अल्लाह आपको माफ़ करे। (सही मुस्लिम किताब फ़ज़ायल असहाबा बाब من فضائل سلمان وبلال وصهيب رضی اللہ عنہم हदीस नंबर 6412) बहरहाल यहां यह भी साबित करना है कि

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की आजिज़ी किस क़दर थी। ऐसे लोग जिनको आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ुलामी से आज़ाद भी करवाया हुआ है इस के बावजूद उनके पास आते हैं और उनसे माफ़ी मांगते हैं और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और आज्ञाकारिता का क्या मयार था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात फ़रमाई कि तुमने नाराज़ कर दिया। यह नहीं फ़रमाया कि जा के माफ़ी माँगो लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौरन ख़ुद गए और उनसे माफ़ी मांगी। यह वाक़िया वर्णन करते हुए शरह में लिखा गया है कि यह वाक़िया सुलह हुदैबिया के अवसर पर कुफ़्फ़ार की जंग बंदी के मुआहिदा के बाद का है जब अबू सुफ़ियान अभी मुस्लमान नहीं हुए थे। इस वक़्त मुस्लमानों का ख़्याल था कि क्यों न हमने उनको पहले ही मार दिया होता।

(सही मुस्लिम ब शरह अल्नोवी भाग 16 पृष्ठ 96 मोअससा कुरतबा 1991ई.)

हिफ़्ज़-ए-क़ुरआन बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी तारीख़ के हवाले से बातें फ़रमाई हैं। फ़रमाते हैं कि "अबू ऊबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुहाजिर साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से निम्नलिखित का हिफ़्ज़ साबित है। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो। उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो। अली रज़ियल्लाहु अन्हो। तलहा रज़ियल्लाहु अन्हो। साद रज़ियल्लाहु अन्हो। इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो। हुज़यफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो सालिम रज़ियल्लाहु अन्हो। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो। अब्दुल्लाह बिन साएब रज़ियल्लाहु अन्हो। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो। और औरतों में से आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा। हज़रत हफ़सह रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा। उनमें से अक्सर ने तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में ही कुरान-ए-शरीफ़ हिफ़्ज़ कर लिया था और कुछ ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हिफ़्ज़ किया।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 429-430)

सानी इसनेन के बारे में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की अपनी रिवायत यूं है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत की। वह कहते थे कि मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा और मैं उस वक़्त ग़ार में था (अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा जबकि वह ग़ार में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे) कि अगर उनमें से कोई अपने पांव के नीचे डाले (अर्थात काफ़िर जो बाहर खड़े थे अगर नीचे देखे) तो हमें ज़रूर देख लेगा। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर आपका क्या ख़्याल है उन दो शख़्सों की निसबत जिनके साथ तीसरा अल्लाह हो। (सही बुख़ारी किताब अस्हाब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब मनाक़िब المهاجرين وفضلهم हदीस नंबर 3653) बुख़ारी की रिवायत है यह

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "(हज़रत) अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो के मुहासिन और विशेष फ़ज़ायल में से एक ख़ास बात यह भी है कि सफ़र-ए-हिज्रत में आपको रिफ़ाक़त के लिए ख़ास किया गया और मख़लूक़ में से सबसे बेहतरीन शख़्स" अर्थात आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की मुश्किलात में आप उनके शरीक थे और आप मसायब के आग़ाज़ से ही हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ास अनीस बनाए थे" अर्थात ख़ास दोस्त बनाए गए थे "ताकि महबूब-ए खुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ आप रज़ियल्लाहु अन्हो का ख़ास ताल्लुक़ साबित हो और इस में भेद यह था कि अल्लाह तआला को यह ख़ूब मालूम था कि सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से ज़्यादा बहादुर, संयमी और उन सबसे ज़्यादा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यारे और मर्द-ए-मैदान थे और यह कि संसार के सरदार सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में फ़ना थे आप रज़ियल्लाहु अन्हो "यानी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो" इबतिदा से ही हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की माली मदद करते और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहम उमूर का ख़्याल फ़रमाते थे। सो अल्लाह ने तकलीफ़-दह वक़्त और मुश्किल हालात में अपने नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की आप रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़रीया तसल्ली फ़रमाई और सिद्दीक के नाम और नबी सकलीनऐ के क़ुरब से मख़सूस फ़रमाया और अल्लाह तआला ने आपको सुइनी उस की ख़िलात-ए-फ़ाखिरा से फ़ैज़याब फ़रमाया और अपने ख़ास अलख़ास बंदों में से बनाया।"

(सिररूल खिलाफ़ा अनुवादक प्रष्ठ 59-60 रुहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 338-339)

ग़ैर मुस्लिम लेखकों ने भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़राज-ए-अक़ीदत पेश किया है

अल्जीरिया का बीसवीं सदी का एक इतिहासकार है आंद्रे सरवीयर (Andre Servier) वह हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में लिखता है कि अबू बकर का मिज़ाज सादा था। ग़ैर मुतवक़्क़े उरूज के बावजूद उन्होंने ग़ुर्बत वाली ज़िंदगी बसर की। जब उन्होंने वफ़ात पाई तो उन्होंने अपने पीछे एक बोसीदा लिबास, एक ग़ुलाम और एक ऊंट विरासत में छोड़ा। वह अहल-ए-मदीना के दिलों पर सच्ची हुकूमत करने वाले थे। उनमें एक बहुत बड़ी ख़ूबी थी और वह थी शक्ति और बहादुरी। लिखता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस ख़ूबी के ज़रीया ग़लबा हासिल किया था और जो आपके दुश्मनों में कमयाब थी वह ख़ूबी हज़रत अबू

बकर रज़ियल्लाहु अन्हो में पाई जाती थी और वह क्या ख़ूबी थी।

अडिग ईमान और मज़बूत यक़ीन और अबू बकर सही जगह पर सही आदमी था। फिर लिखता है कि इस बुज़ुर्ग और नेक सीरत इन्सान ने अपने मौक़िफ़ को इख़तेयार किया जबकि हर तरफ़ बग़ावत बरपा थी। आपने अपने मोमिनाना और मज़बूत, अडिग इरादा और संकल्प से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के काम को पुनः आरंभ किया।

(Islam and the Psychology of the Muslim by André Servier page:51)

फिर एक बर्तानवी इतिहासकार है जे जे सानडरज़ (J.J. Saunders) वह लिखता है कि

पहले ख़लीफ़ा की याद मुस्लमानों में हमेशा एक ऐसे इन्सान के तौर पर रही है जो कामिल वफ़ादार, लुतफ़-ओ-करम का पैकर था और कोई सख़्त से सख़्त तूफ़ान भी उनकी मुस्तक़िल तहम्मुल मिज़ाजी को हिला नहीं सका।

उनका अहद-ए-हुकूमत जबकि थोड़ा था लेकिन इस में जो सफलताएं हासिल हुईं वह बहुत बड़ी थीं। उनकी तबीयत के ठहराव और सबात-ओ-इस्तिक़लाल ने मुरतद होने वालों पर क़ाबू पा कर अरब क़ौम को दुबारा इस्लाम के दायरे में दाख़िल कर दिया और उनके शाम के उपद्रव को खंडित करने के इरादे ने अरब दुनिया की सलतनत की बुनियाद रख दी।

(A History of Medieval Islam by J.J. Saunders page 44-45 London 2002)

फिर एक और अंग्रेज़ लेखक है एच जी वेल्ज़ (H.G. Wells) यह कहता है कि यह कहा जाता है कि इस्लामी सलतनत की असल बुनियाद रखने वाले मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा अबू बकर थे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोस्त और मददगार थे। ख़ैर यह तो बढ़ोतरी कर रहा है यहां। बहरहाल यह लिख रहा है। फिर आगे लिखता है कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने मज़बूत किरदार के बावजूद आरंभिक इस्लाम का दिमाग़ और तसव्वुर थे। العیاذباللہ،نعوذباللہ (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) तो अबूबकर उस का शऊर और अज़म थे। जब कभी मुहम्मद कमज़ोर होते (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तो अबू बकर उनकी ढारस बंधाते थे। बहरहाल ये बातें तो उस की व्यर्थ की और लग़ू बातें हैं जिसमें कोई सच्चाई नहीं है लेकिन यह आगे जो सही बात लिख रहा है वह यह लिख है कि

जब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहांत हुआ तो अबूबकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा और जांनशीन बने और पहाड़ों को भी हिला देने वाले ईमान के साथ उन्होंने बड़ी सादगी और समझदारी से तीन या चार हज़ार अरबों पर मुश्तमिल छोटी छोटी सी फ़ौज के साथ सारी दुनिया को अल्लाह के ताबे बनाने का काम शुरू किया।

(A Short History Of the World by H.G. Wells page 76)

बहरहाल जैसा कि मैंने कहा कि लेखक ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बाअज़ ख़ूबियों का वर्णन किया है जो बिलाशुबा उन में मौजूद थीं लेकिन चूँकि ये लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस आला-ओ-अर्फ़ा मुक़ाम-ए-नबुव्वत की हक़ीक़त का इदराक और शऊर नहीं रखते थे इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इत्यादि की तारीफ़ में इस हद तक मुबालग़ा आमेज़ी से काम ले जाते हैं कि जो किसी भी तौर पर दरुस्त नहीं सकता है जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो या हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ये सब अपने आक़ा-ओ-मुता हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वफ़ादार और कामिल मतबा और आशिक़ थे।

ये लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दिमाग नहीं थे बल्कि ख़ादिमाना रंग में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए हाथ और पांव थे। ऐसा ही देन-ए-इस्लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिमाग़ का नाम या काम नहीं था जिस तरह उसने यह लिखा है कि इस्लाम जो था उस का दिमाग़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे बल्कि सरासर ख़ुदाई राहनुमाई और अल्लाह की वह्यी के नतीजा में एक कामिल और मुकम्मल शरीयत और दीन का नाम इस्लाम है और न ही किसी भी घबराहट या कमज़ोरी के मौक़ा पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ढारस बने बल्कि प्रथम तो इस लोगों मे सबसे बहादुर, मज़बूत और बहादुर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सारी ज़िंदगी में हम कभी किसी घबराहट या कमज़ोरी को देख नहीं सकते और अगर कोई परेशानी का मौक़ा आया भी हो तो ख़ुदाए क़ादिर-ओ-तवाना उनके लिए ढारस बनता रहा। लेखक ने तो लिखा है कि अबू बकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ढारस बंधाते थे जबकि इस के बिल्कुल उलट हमने देखा है कि अगर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़िंदगी में किसी परेशानी या घबराहट का वक़्त आया भी तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके लिए ढारस बना करते थे जैसा कि हिज्रत के मौक़ा पर जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो सख़्त परेशान हुए और घबराए। बेशक यह घबराहट आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ही थी लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की इस घबराहट के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी ढारस बने। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से यह कहा कि لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا (अल् तौबा : 40) कि हे अबू बकर तुम घबराओ नहीं। अल्लाह हमारे साथ है। और जैसा कि अभी पहले बयान हो चुका है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ुद वर्णन फ़रमाया जब यह घबराहट थी तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तसल्ली दिलाई। अतः यह एक वाक़िया ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अज़म, तवक्कुल और अल्लाह तआला के ख़ास नबी होने की स्पष्ट दलील है लेकिन बहरहाल ये अक़्ल के अंधे अगर एक बात सच्च कहने में मजबूर होते हैं तो कुछ न कुछ बीच में गंद मिलाने की ज़रूर कोशिश करते हैं।

फिर एक और बर्तानवी मुस्तश्रिक़ है टी डब्लयू आरनल्ड (T.W. Arnold) कहता है कि वह (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो) एक दौलतमंद ताजिर थे। आला किरदार और अपनी ज़हानत और क़ाबिलीयत की बिना पर उनके हमवतन उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे। इस्लाम क़बूल करने के बाद उन्होंने अपनी दौलत का बड़ा हिस्सा इन मुस्लमान ग़ुलामों को ख़रीदने पर खर्च कर दिया जिन्हें कुफ़्फ़ार उनके आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीमात पर ईमान लाने के सबब अज़ीयतें देते थे।

(The Preaching of Islam by T.W. Arnold page 10 Archibald constable & co 1896)

फिर स्कॉटलैंड का एक मुस्तश्रिक़ और बर्तानवी पश्चिमी प्रांत का लैफ़्टीनैंट गवर्नर सर विलियम मेवर (Sir William Muir) है। यह लिखता है कि

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का अहद-ए-हुकूमत संक्षिप्त था लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद इस्लाम अबूबकर से ज़्यादा किसी और का धन्यवादी नहीं।

अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से ज़्यादा इस्लाम की ख़िदमत किसी और ने नहीं की

(The Caliphate its rise, decline and fall by Sir William Muir. P. 86 The religious tract society 1892)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अख़लाक़-ए-हसना के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि "क्या यह सच्च नहीं कि बड़े बड़े ज़बरदस्त बादशाह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बल्कि अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम लेकर भी रज़ियल्लाहु अन्हो कह उठते रहे हैं और चाहते रहे हैं कि काश उनकी ख़िदमत का ही हमें अवसर मिलता। फिर कौन है जो कह सके कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो और अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ुर्बत की ज़िंदगी बसर कर के कुछ नुक़्सान उठाया। बेशक उन्होंने दुनियावी लिहाज़ से अपने ऊपर एक मौत क़बूल कर ली। लेकिन वे मौत उनकी हयात साबित हुई और अब कोई ताक़त उनको मार नहीं सकती। वे क़ियामत तक ज़िंदा रहेंगे।

(शुक्रिया और ऐलान ज़रूरी, अनवारुल उलूम भाग 2 पृष्ठ 74)

फिर आप फ़रमाते हैं कि "अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अल्लाह तआला ने महिज़ इस लिए अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो नहीं बनाया था कि वे इत्तिफ़ाक़ी तौर पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में पैदा हो गए थे। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को अल्लाह तआला ने इस लिए उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का दर्जा अता नहीं किया था कि वे इत्तिफ़ाक़ी तौर पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में पैदा हो गए थे। उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और अली रज़ियल्लाहु अन्हो को महिज़ इस लिए ख़ुदा तआला ने उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और अली रज़ियल्लाहु अन्हो का जो मर्तबा है वह अता नहीं किया था कि वे इत्तिफ़ाक़ी तौर पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दामादी के मुक़ाम पर पहुंच गए थे या तलहा रज़ियल्लाहु अन्हो और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो को महिज़ इस लिए कि वे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ानदान या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ौम में से थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में पैदा हो गए थे इज़्ज़तें और रुतबे अता नहीं किए। बल्कि ये वे लोग थे जिन्हों ने अपनी क़ुर्बानीयों को ऐसे आला मुक़ाम पर पहुंचा दिया था कि जिससे ज़्यादा इन्सान के वहम-ओ-गुमान में भी नहीं आता।"

(ख़ुतबात ए महमूद भाग 26 पृष्ठ 384-385)

अतः ये क़ुर्बानियां हैं जो इन्सान को मुक़ाम दिलाती हैं

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो एक जगह फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो की कितनी इज़्ज़त हमारे दिलों में है परंतु क्या कोई कह सकता है कि यह इज़्ज़त उन की औलाद की वजह से है? हम में से तो अक्सर ऐसे हैं जो जानते तक नहीं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की नसल कहाँ तक चली और उनकी नसल के हालात ही महफ़ूज़ नहीं हैं। आज बहुत से लोग ऐसे मौजूद हैं जो अपने आपको हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की औलाद ज़ाहिर करके अपने आपको सिद्दीक़ी कहते हैं। लेकिन अगर उनसे कोई कहे कि तुम क़सम खाओ कि वाक़ई तुम सिद्दीक़ी हो और तुम्हारा सिलसिला नसब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु

अन्हो तक पहुंचता है? तो वे हरगिज़ क़सम नहीं खा सकेंगे और अगर वे कसम खा भी जाएं तो हम कहेंगे कि ये झूठ बोल रहे हैं और बेईमान हैं। इस की वजह यही है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की नसल के हालात इतने महफ़ूज़ ही नहीं हैं कि आज कोई अपने आपको सही तौर पर उनकी तरफ़ मंसूब कर सके। अतः हम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की इज़्ज़त इस लिए नहीं करते कि उनकी नसल का काम आलीशान है, हम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की इज़्ज़त इस लिए नहीं करते कि उनकी नसल का काम निहायत आला पाया का है, हम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की इज़्ज़त इस लिए नहीं करते कि उन की नसल कारहाए नुमायां कर रही है और हम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को इस लिए नहीं याद करते कि उनकी नसल में ख़ास खूबियां हैं। (हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो का तो सिलसिला नसब भी अब तक चल रहा है परंतु उनकी इज़्ज़त इस लिए नहीं की जाती कि उनकी नसल अब तक क़ायम है।) बाक़ी भी जितने साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थे उन में से कोई एक भी तो ऐसा नहीं जिसे उस की नसल की वजह से याद किया जाता हो। अतः हक़ीक़त यह है कि हम उन को उन की ज़ाती क़ुर्बानियों की वजह से याद करते हैं और उनकी इज़्ज़त हैं।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 27 पृष्ठ : 657)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देख लो। आप रज़ियल्लाहु अन्हो मक्का के एक मामूली ताजिर थे अगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अवतरित नहीं होते और मक्का की तारीख़ लिखी जाती तो मुर्ख़ सिर्फ इतना वर्णन करता कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अरब का एक शरीफ़ और दियानतदार व्यापारी था। परंतु

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इत्तिबा से अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को वह मुक़ाम मिला तो आज सारी दुनिया उनका अदब और सम्मान के साथ नाम लेती है।

जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को मुस्लमानों ने अपना ख़लीफ़ा और बादशाह बना लिया तो मक्का में भी यह ख़बर जा पहुंची। एक मजलिस में बहुत से लोग बैठे थे जिन में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के वालिद अबू क़हाफ़ा भी मौजूद थे। जब उन्होंने सुना कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर लोगों ने बैअत कर ली है तो उनके लिए इस अमर को तस्लीम करना ना-मुम्किन हो गया और उन्होंने ख़बर देने वाले से पूछा कि तुम किस अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन कर रहे हो? उसने कहा। वही अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो तुम्हारा बेटा है। उन्होंने कहा", उनके वालिद ने, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के वालिद अबू क़हाफ़ा ने ''अरब के एक एक क़बीले का नाम लेकर कहना शुरू कर दिया कि उसने भी अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बैअत कर ली है?' फिर पूछना शुरू क्या कि यह जो बड़े बड़े क़बायल हैं क्या उन्होंने अबूबकर की बैअत कर ली है? हर एक का नाम ले-ले कर पूछा। "और जब उसने कहा कि सबने मुत्तफ़िक़ा तौर पर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़लीफ़ा और बादशाह बना लिया है तो अबू क़हाफ़ा बे-इख़्तियार कहने लगे कि اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ अर्थात मैं गवाही देता हूँ कि ख़ुदा तआला के सिवा और कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह उस के सच्चे रसूल हैं।" फ़रमाते हैं कि "हालाँकि वह देर से मुस्लमान थे।" अबू क़हाफ़ा फ़तह मक्का के बाद या शायद इस से पहले मुस्लमान हो गए थे। "उन्होंने जो यह कलिमा पढ़ा। और दुबारा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत का इक़रार किया तो इसी लिए कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा हुए तो उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने समझा कि यह इस्लाम की सच्चाई का एक ज़बरदस्त सबूत है अन्यथा मेरे बेटे की क्या हैसियत थी कि उस के हाथ पर सारा अरब मुत्तहिद हो जाता।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 205-206)

फिर एक जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि "हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देख लो। उन्होंने जब इस्लाम क़बूल किया तो लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि मक्का का एक लीडर था अब ज़लील हो गया परंतु इस्लाम से पहले उनकी इस से ज़्यादा क्या इज़्ज़त हो सकती थी कि दो सौ या तीन सौ आदमी उनका नाम इज़्ज़त से लेते होंगे। लेकिन इस्लाम की बरकत से अल्लाह तआला ने उन्हें ख़िलाफ़त और बादशाहत की बरकत से नवाज़ा। और उन्हें दुनिया-भर में दाइमी इज़्ज़त और एक लाज़वाल शौहरत का मालिक बना दिया .. कहाँ एक क़बीला की लीडरी और कहाँ यह कि तमाम मुस्लमानों का ख़लीफ़ा और अरब देश का बादशाह होना जिसने ईरान और रुम से टक्कर ली और उन्हें नीचा दिखाया।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 2 पृष्ठ 87)

फिर एक जगह आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि ":देखो बादशाहत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों पर ही नहीं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खादिमों के क़दमों पर भी आ गिरी लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न उस वक़्त ख़ाहिश की जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अभी बादशाहत नहीं मिली थी और न उस वक़्त" बादशाहत की "ख़ाहिश की जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बादशाहत मिल गई। न हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बादशाहत की ख़ाहिश की, न हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बादशाहत की ख़ाहिश की, न हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने बादशाहत की ख़ाहिश की और न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने बादशाहत की ख़ाहिश की बल्कि उनमें बादशाहत के आसार पाए ही नहीं जाते थे हालाँकि वे दुनिया के इतने ज़बरदस्त बादशाह थे जिनकी तारीख़ में मिसाल ही नहीं मिलती। उनकी स्वभाव इतना सादा था, उनकी मुलाक़ातें इतनी सादा थीं, उनमें तवाज़ो इस क़दर पाया जाता था कि ज़ाहिरी तौर पर यह भी मालूम नहीं हो सकता था कि वह बादशाह हैं। उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि मेरी हुकूमत है, मैं बादशाह हूँ। उनमें से कोई शख़्स भी कभी इस बात पर आमादा नहीं हुआ कि वह अपनी बादशाहत का इज़हार करे और न ही वह इस बात की कभी ख़ाहिश करते थे। दरहक़ीक़त जो ख़ुदा तआला के हो जाते हैं दुनिया ख़ुद उनके क़दमों पर आ गिरती है। लोग तो यह समझते हैं कि बादशाहतें से उन्हें मदद मिलेगी। जो ख़ुदा तआला के हो जाते हैं बादशाहतें समझती हैं कि उन्हें उनकी ग़ुलामी से इज़्ज़त मिलेगी।

(अल्लाह तआला से सच्चा और हक़ीक़ी ताल्लुक़ क़ायम करने में ही हमारी कामयाबी है, अनवारुल उलूम भाग 21 पृष्ठ : 99)

फिर एक जगह आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "देखो अबू बकर बादशाह बन गए। लेकिन उनका बाप यह समझता था कि उनका बादशाह होना नामुमकिन है। क्योंकि उन्हें बादशाहत ख़ुदा तआला की तरफ़ से मिली थी। इस के मुक़ाबला में तैमूर भी एक बड़ा बादशाह था लेकिन वह अपनी सांसारिक तदाबीर की वजह से बादशाह हुआ था। नपोलीन भी बड़ा बादशाह था लेकिन वह अपनी मेहनत और सांसारिक तदाबीर से बादशाह बन गया था। नादिर शाह भी बड़ा बादशाह था लेकिन उसे भी बादशाहत अपनी ज़ाती मेहनत और कोशिश और सांसारिक तदाबीर से मिली थी। अतः बादशाहत सबको मिली। लेकिन हम कहेंगे तैमूर को बादशाहत आदमियों के द्वारा मिली। लेकिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बादशाहत ख़ुदा तआला से मिली हम कहेंगे नपोलीन को बादशाहत सांसारिक तदाबीर से मिली थी लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को बादशाहत ख़ुदा तआला से मिली। हम कहेंगे चंगेज़ ख़ान को बादशाहत सांसारिक ज़राए से मिली थी लेकिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को बादशाहत ख़ुदा तआला ने दी। हम कहेंगे नादिरशाह सांसारिक तदाबीर से बादशाह बना था लेकिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को बादशाहत ख़ुदा तआला ने दी।

अतः बादशाहत सब को मिली, सांसारिक बादशाहों का भी दबदबा था, रोब था। उनका भी क़ानून चलता था और खलिफ़ा का भी। बल्कि उनका क़ानून अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और अली रज़ियल्लाहु अन्हो से ज़्यादा चलता था। लेकिन यह ख़ुदा तआला की तरफ़ से बादशाह निर्धारित हुए थे "अर्थत ये चारों" और वे आदमियों के ज़रीया बादशाह हुए थे।" जो दुनिया-दार बादशाह थे। "अतः जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी अहम काम से पहले बिस्मिल्ला नहीं पढ़ता "बिस्मिल्ला की बरकात का आप यहां वर्णन फ़र्मा रहे हैं" उसे बरकत नहीं मिल सकती। तो इस का यह मतलब नहीं था कि वह अपने मक़सद में नाकाम रहता है। बल्कि उस का मतलब यह था कि उसे वह मक़सद ख़ुदा तआला से नहीं मिल सकता। जो बादशाहत ख़ुदा तआला के ज़रीया मिलने वाली थी वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और अली रज़ियल्लाहु अन्हो को मिली। उनके सिवा दूसरे लोगों को नहीं मिली। दूसरों को जो बादशाहत मिली वह शैतान से मिली या इन्सानों से मिली। अन्यथा लेनिन, स्टालिन और मालंकूफ़ ने बिस्मिल्ला नहीं पढ़ी लेकिन बादशाहत उनको भी मिली। रूज़वेल्ट, टरूमैन और आइज़न हायर ने भी बिस्मिल्ला नहीं पढ़ी लेकिन बादशाहत उनको भी मिली। वे बिस्मिल्ला को जानते भी नहीं और न बिस्मिल्ला की उनके दिलों में कोई क़दर है। अतः जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बिस्मिल्ला पढ़ने के बग़ैर बरकत नहीं मिलती तो इस का यह मतलब था कि उसे ख़ुदा तआला की तरफ़ से कुछ नहीं मिलता। ख़ुदा तआला की तरफ़ से सिर्फ उसी को मिलता है जो हर अहम काम से पहले बिस्मिल्ला पढ़ लेता है। अब हर शख़्स यह समझ सकता है कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से मिलने वाली चीज़ ज़्यादा बरकत वाली होती है या बंदों से मिलने वाली चीज़ ज़्यादा बरकत वाली होती है। इन्सानी तदाबीर से हासिल की हुई बादशाहत बंद भी हो सकती है लेकिन ख़ुदा तआला की दी हुई बादशाहत बंद नहीं हो सकती।"

काश कि यह नुक्ता मुस्लमानों को भी आज समझ आ जाए। जबकि बिस्मिल्ला पढ़ते भी हैं लेकिन वह भी लगता है केवल ज़ाहिरी मुँह से अदायगी हो रही है और दिल से नहीं।

फिर लिखते हैं कि "यज़ीद भी एक बादशाह था उसे कितना ग़रूर था। उसे ताक़त का कितना दावा था। उसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ानदान को तबाह किया।" बज़ाहिर अपने आपको मुस्लमान भी कहता था। "उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की औलाद को क़तल किया और उस की गर्दन नीचे नहीं होती थी।" बड़ा अकड़ के रहता था "वह समझता था कि मेरे सामने कोई नहीं

बोल सकता हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी बादशाह हुए लेकिन उनमें विनम्रता था, इनकेसारी थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते थे मुझे ख़ुदा तआला ने लोगों की ख़िदमत के लिए निर्धारित किया है। और ख़िदमत के लिए जितनी मोहलत मुझे मिल जाए उस का एहसान है।

लेकिन यज़ीद कहता था मुझे मेरे बाप से बादशाहत मिली है। मैं जिसको चाहूँ मार दूं और जिसको चाहूँ ज़िंदा रखूँ। बज़ाहिर यज़ीद अपनी बादशाहत में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से बढ़ा हुआ था। वह कहता था मैं ख़ानदानी बादशाह हूँ। किस की ताक़त है कि मेरे सामने बोले। लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते थे कि मैं इस काबिल कहाँ था कि बादशाह बन जाता। मुझे जो कुछ दिया है ख़ुदा तआला ने दिया है। मैं अपने ज़ोर से बादशाह नहीं बन सकता था। मैं हर एक का ख़ादिम हूँ। मैं ग़रीब का भी ख़ादिम हूँ और अमीर का भी ख़ादिम हूँ। अगर मुझ से कोई ग़लती सरज़द हो तो मुझसे उसका अभी बदला ले लूँ। क़ियामत के दिन मुझे ख़राब न करना।" हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में" एक सुनने वाला कहता होगा कि यह क्या है। उसे तो एक नंबरदार की सी हैसियत भी हासिल नहीं। लेकिन वह यज़ीद की बात सुनता होगा तो कहता होगा ये बातें हैं जो क़ैसर-ओ-किसरा वाली हैं।" यह बादशाहों वाली बातें हैं जो यज़ीद कर रहा है। "लेकिन जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौत हो गए तो उन के बेटे, उन के पोते और पड़ पोते फिर पड़पोतों के बेटे और फिर आगे वह नसल जिसमें पोता और पड़पोता का सवाल ही बाक़ी नहीं रहता वह बराबर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से अपने रिश्ता पर फ़ख़र करते थे। फिर उन को भी जाने दो। वे लोग जो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ मंसूब भी नहीं, जो आपके ख़ानदान को भी कभी नहीं मिले वह भी आपके वाक़ियात पढ़ते हैं तो आज तक उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। उनकी मुहब्बत जोश में आजाती है। कोई शख़्स आप रज़ियल्लाहु अन्हो को बुरा कह दे तो उनका ख़ून खोलने लगता है। उद्देश्य औलाद तो अलग रही ग़ैर भी अपनी जान उन पर निसार करने पर तैयार हो जाते हैं हर कलमा पढ़ने वाला जब आपका नाम सुनता है तो कहता है रज़ियल्लाहु तआला अन्हो परंतु वह फ़ख़र करने वाला यज़ीद जो अपने आपको बादशाह इब्न-ए-बादशाह कहते हुए नहीं थकता था जब फ़ौत हुआ तो लोगों ने इस के बेटे को उस की जगह बादशाह बना दिया। जुमा का दिन आया तो वह मिंबर पर खड़ा हुआ और कहा कि हे लोगो! मेरा दादा उस वक़्त बादशाह बना जब उस से ज़्यादा बादशाहत के मुस्तहिक़ लोग मौजूद थे। मेरा बाप उस वक़्त बादशाह बना जब इस से ज़्यादा मुस्तहिक़ लोग मौजूद थे। अब मुझे बादशाह बना दिया गया है हालाँकि मुझ से ज़्यादा मुस्तहिक़ लोग मौजूद हैं। हे लोगो मुझसे यह बोझ उठाया नहीं जाता। मेरे बाप और मेरे दादा ने मुस्तहक़्क़ीन के हक़ मारे हैं लेकिन में उन के हक़ मारने को तैयार नहीं। तुम्हारी ख़िलाफ़त यह पड़ी है जिसको चाहो दे दो। मैं न उस का अहल हूँ और न अपने बाप दादा को इस का अहल समझता हूँ। उन्होंने जाबिराना और ज़ालिमाना तौर पर हुकूमत पर क़बज़ा किया था। मैं अब हक़दारों को उनका हक़ वापस देना चाहता हूँ। यह कह कर घर चला गया। उस की माँ ने जब यह वाक़िया सुना तो कहा। कम्बख़्त तू ने अपने बाप दादा की नाक काट दी। उसने जवाब दिया। माँ अगर ख़ुदा तआला ने तुझे अक़ल दी होती तो तू समझती कि मैंने बाप दादा की नाक नहीं काटी। मैंने उनकी नाक जोड़ दी है। इस के बाद वह अपने घर में गोशा नशीन हो कर बैठ गया और मरते दम तक घर से बाहर नहीं निकला।"

(ख़ुतबात-ए महमूद भाग 34 पृष्ठ 86 से 88)

अतः यह बादशाहत जो अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलती है उस का हक़ भी अदा किया जाता है। यह भी हमारे मुस्लमान लीडरों के लिए, बादशाहों के लिए सबक़ है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फिर वर्णन फ़रमाते हैं :"इस्लाम की ख़िदमत और दीन के लिए क़ुर्बानियां करने की वजह से आज हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को जो अज़मत हासिल है वह क्या दुनिया के बड़े से बड़े बादशाहों को भी हासिल है? आज दुनिया के बादशाहों में से कोई एक भी नहीं जिसे इतनी अज़मत हासिल हो जितनी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को हासिल है बल्कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तो अलग रहे किसी बड़े से बड़े बादशाह को भी इतनी अज़मत हासिल नहीं जितनी मुस्लमानों के नज़दीक हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के नौकरों को हासिल है। बल्कि हक़ यह है कि हमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का कुत्ता भी बड़ी-बड़ी इज़्ज़तों वालों से अच्छा लगता है। इस लिए कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर का ख़ादिम हो गया।"

फ़रमाते है ...वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर का ग़ुलाम हो गया तो उकी हर चीज़ हमें प्यारी लगने लग गई और अब यह मुम्किन ही नहीं कि कोई शख़्स इस अज़मत को हमारे दिलों से मिटा सके।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 19 पृष्ठ : 681)

हमारे पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीन करते हैं लेकिन हमारे ये ख़्यालात हैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के एक बेटे जो देर के बाद इस्लाम में दाख़िल हुए थे एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजलिस में बैठे थे मुख़्तलिफ़ बातें हो रही थीं कि वे बातों बातों में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहने लगे अब्बा जान फ़ुलां जंग के अवसर पर मैं एक पत्थर के पीछे छुपा हुआ था। आप मेरे सामने से दो दफ़ा गुज़रे। मैं अगर उस वक़्त चाहता तो आपको मार देता मगर मैंने इस ख़्याल से हाथ नहीं उठाया कि आप मेरे बाप हैं। अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो यह सुनकर बोले मैं ने तुझे उस वक़्त देखा नहीं अगर मैं तुझे देख लेता तो चूँकि तू ख़ुदा का दुश्मन हो कर मैदान में आया था इस लिए मैं तुझे ज़रूर मार देता।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 16 पृष्ठ 621-622)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अख़लाक़ फाज़िला के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो वे था जिसकी फ़ित्रत में सआदत का तेल और बत्ती पहले से मौजूद थी।" अर्थात इस में जलने की सलाहीयत थी, रोशन होने की सलाहीयत थी। "इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाक तालीम ने इस को फ़ील-फ़ौर प्रभावित कर के रोशन कर दिया। उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई बेहस नहीं की। कोई निशान और मोजिज़ा नहीं मांगा। तुरंत सुन कर सिर्फ इतना ही पूछा कि क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबुव्वत का दावा करते हैं। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हाँ। तो बोल उठे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गवाह रहें। मैं सबसे पहले ईमान लाता हूँ।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "यह तजुर्बा किया गया है कि सवाल करने वाले बहुत कम हिदायत पाते हैं। हाँ हुस्न-ए-ज़न और सब्र से काम लेने वाले हिदायत से पूरे तौर पर हिस्सा लेते हैं। इस का नमूना अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और अबू जहल दोनों मौजूद हैं। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने झगड़ा नहीं किया और निशान नहीं मांगे। परंतु उसको वह दिया गया जो निशान मांगने वालों को नहीं मिला। उसने निशान पर निशान देखे। और ख़ुद एक अज़ीम निशान बना। अबू जहल ने हुज्जत की और मुख़ालिफ़त और जहालत से बाज़ नहीं आया। उसने निशान पर निशान देखे परंतु देख नहीं सका। आख़िर ख़ुद दूसरों के लिए निशान हो कर मुख़ालिफ़त ही में हलाक हुआ।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 165 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मक्का की मिट्टी एक ही थी जिससे अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो और अबू जहल पैदा हुए। मक्का वही मक्का है जहां अब करोड़ों इन्सान हर वर्ग और हर दर्जा के दुनिया के हर हिस्सा से जमा होते हैं। इसी सरज़मीन से यह दोनो इन्सान पैदा हुए। जिनमें से प्रथम वर्णित अपनी सआदत और रशद की वजह से हिदायत पाकर सिद्दीक़ों का कमाल पा गया। और दूसरा शरारत, जहालत, व्यर्थ की दुश्मनी और हक़ की मुख़ालफ़त में शौहरत याफ़ता है।

याद रखो! कमाल दो ही किस्म के होते हैं। एक रहमानी, दूसरा शैतानी। रहमानी कमाल के आदमी आसमान पर एक शौहरत और इज़्ज़त पाते हैं। इसी तरह शैतानी कमाल के आदमी शयातीन की नसल में शौहरत हैं।

उद्देश्य एक ही जगह दोनो थे। पैग़ंबर ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी से कुछ फ़र्क़ नहीं किया। जो कुछ हुक्म अल्लाह तआला ने दिया वह सब का सब यकसाँ तौर पर सबको पहुंचा दिया। परंतु बदनसीब बदक़िस्मत महरूम रह गए। और सईद हिदायत पा कर कामिल हो गए। अबू जहल और इस के साथियों ने बीसियों निशान देखे। अनवार व बरकाते ईलाही को मुशाहिदा किया। परंतु उन को कुछ भी फ़ायदा नहीं हुआ।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 164 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मज़ीद फ़रमाते हैं : "देखो मक्का मुअज़्ज़मा में जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़हूर हुआ तो अबू जहल भी मक्का ही में था और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो भी मक्का ही के थे लेकिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ित्रत को सच्चाई के क़बूल करने के साथ कुछ ऐसी मुनासबत थी कि अभी आप रज़ियल्लाहु अन्हो शहर में भी दाख़िल नहीं हुए थे। रास्ता ही में जब एक शख़्स से पूछा कि कोई नई ख़बर सुनाओ और उस ने कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबुव्वत का दावा किया है तो उसी जगह ईमान ले आए और कोई मोजिज़ा और निशान नहीं मांगा जबकि बाद में बे-इंतिहा मोजज़ात आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखे और ख़ुद एक आयत ठहरे। लेकिन अबू जहल ने बावजूद एक के बाद एक हज़ारों हज़ार निशान देखे लेकिन वह मुख़ालिफ़त और इंकार से बाज़ नहीं आया और तक़ज़ीब ही करता रहा।

इस में क्या रहस्य था? "क्या भेद था?" पैदाइश दोनों की एक ही जगह की थी। एक सिद्दीक़ ठहरता है और दूसरा जो अबू अलहकम कहलाता था वह अबू जहल बनता है। इस में यही राज़ था कि इस की फ़ित्रत को सच्चाई के साथ कोई मुनासबत ही नहीं थी। उद्देश्य ईमानी उमूर मुनासबत ही पर मुनहसिर हैं। जब मुनासबत होती है तो वह ख़ुद ज्ञान देने वाली बन जाती है और सदमार्ग की तालीम देती है और यही वजह है कि अहल-ए-मुनासबत का वजूद भी एक निशान होता है।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 11-12 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मेरे रब ने मुझ पर यह ज़ाहिर किया कि सिद्दीक़ और फ़ारूक़ और उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हो) नेको कार और मोमिन थे और उन लोगों में से थे जिन्हें अल्लाह ने चुन लिया और जो ख़ुदा ए रहमान की इनायात से ख़ास किए गए और अक्सर साहिबान ने उनके मुहासिन की शहादत दी।

उन्होंने बुज़ुर्ग-ओ-बरतर ख़ुदा की ख़ुशनुदी की ख़ातिर वतन छोड़े। हर जंग की भट्टी में दाख़िल हुए और मौसम-ए-गर्मा की दोपहर की तपिश और सर्दीयों की रात की ठंडक की परवाह नहीं की बल्कि नौख़ेज़ जवानों की तरह दीन की राहों पर महू-ए-ख़िराम हुए और अपनों और ग़ैरों की तरफ़ मायल नहीं हुए और अल्लाह की ख़ातिर सबको ख़ैर बाद कह दिया। इन के आमाल में ख़ुशबू और उन के अफ़आल में महक है और ये सब कुछ उनके मुरातिब के बाग़ात और उनकी नेकियों के गुलिस्तानों की तरफ़ रहनुमाई करता है और उनकी बाद-ए-नसीम अपने मुअत्तर झोंकों से उनके इसरार का पता देती है और उनके अनवार अपनी पूरी ताबानियों से हम पर ज़ाहिर होते हैं।"

(सिररूल खिलाफ़ा अनुवादक पृष्ठ : 25-26)

फिर आप फ़रमाते हैं : "बख़ुदा, अल्लाह तआला ने शेख़ीन "यानी" (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को और तीसरे जो हैं "यानी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो" हर एक को इस्लाम के दरवाज़े और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ौज के हर अव्वल दस्ते बनाया है। अतः जो शख़्स उनकी अज़मत से इंकार करता है और उनकी क़तई दलील को हक़ीर जानता है और उनके साथ अदब से पेश नहीं आता बल्कि उनका अपमान करता और उन को बुरा भला कहने के दर पर रहता और ज़बान दराज़ी करता है मुझे उस के बद-अंजाम और सल्ब-ए-ईमान का डर है।

और जिन्हों ने उनको दुख दिया, उन पर आरोप लगाया और बोहतान लगाए तो दिल की सख़्ती और ख़ुदाए रहमान का ग़ज़ब उनका अंजाम ठहरा। मेरा बार बार का तजुर्बा है और मैं इस का खुले तौर पर इज़हार भी कर चुका हूँ कि इन सादात से द्वेष रखना बरकात ज़ाहिर करने वाले अल्लाह से सबसे ज़्यादा क़ता ताल्लुक़ी का बायस है और जिसने भी उनसे दुश्मनी की तो ऐसे शख़्स पर रहमत और शफ़क़त की सब राहें बंद कर दी जाती हैं और इस के लिए इलम-ओ-इर्फ़ान के दरवाज़े वा नहीं किए जाते।"

(सिररूल खिलाफ़ा अनुवादक पृष्ठ : 28-29)

फिर आप फ़रमाते हैं : "तुम ऐसे शख़्स पर कैसे लानत करते हो जिसके दावा को अल्लाह ने साबित कर दिया।" बाअज़ लोग, फ़िरक़े भी ऐसे अलफ़ाज़ इस्तमाल करते हैं जो ग़लत हैं। आप ने फ़रमाया कि "ऐसे शख़्स पर कैसे लानत करते हो जिसके दावा को अल्लाह ने साबित कर दिया और उसने अल्लाह से मदद मांगी तो अल्लाह ने उस की मदद की और उस की नुसरत के लिए निशानात दिखाए और बद अंदेशों की तदबीरों को पारापारा कर दिया। और आप "यानी" (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो) ने इस्लाम को शिकस्ता कर देने वाली आज़माईश और जोरो जफ़ा के सेलाब से बचाया, और फुँकारने वाले अज़दहा को हलाक किया। आपने अमन-ओ-अमान क़ायम किया और अल्लाह के फ़ज़ल से हर झूठे को नाकाम किया।

और हज़रत (अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो) की और बहुत सी खूबियां और बे-हिसाब-ओ-बेशुमार बरकतें हैं और मुस्लमानों की गर्दनें आप रज़ियल्लाहु अन्हो के एहसान के अधीन हैं और इस बात का इंकार सिर्फ वही शख़्स कर सकता है जो अव्वल दर्जा का ज़्यादती करने वाला हो।

जिस तरह अल्लाह ने आपको मोमिनों के लिए मूजिब-ए-अमन और मुर्तदों और काफ़िरों की आग बुझाने वाला बनाया इसी तरह उसने आपको अव्वल दर्जा का फुर्क़ान का सहायक और ख़ादिम-ए-क़ुरआन और अल्लाह तआला की किताब-ए-मुबय्यन की इशाअत करने वाला बनाया। अतः आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ुरआन जमा करने और रहमान ख़ुदा के महबूब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से इस की वर्णन करदा तर्तीब दरयाफ़त करने में पूरी कोशिश सिर्फ फ़र्मा दी। और दीन की ग़मख़्वारी में आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आँखें एक जारी चश्म के बहने से भी बढ़कर अशकबार हुईं।"

(सिररूल खिलाफ़ा अनुवादक पृष्ठ 57-58)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "अजीब बात यह है कि शीया हज़रात "बाअज़ लोग जो शीया हैं" यह इक़रार भी करते हैं कि (हज़रत) अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो दुश्मनों की कसरत के अय्याम में ईमान लाए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इबतिला की सख़्त घड़ी में (हज़रत) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिफ़ाक़त इख़्तेयार की और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (मक्का) से निकले तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो भी कमाल सिदक़-ओ-सफ़ा से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मय्यत में निकल खड़े हुए और तकालीफ़ बर्दाश्त कीं और वतन और दोस्त अहबाब और अपना पूरे का पूरा ख़ानदान छोड़ दिया और ख़ुदाए लतीफ़ को इख़्तेयार फ़रमाया। फिर हर जंग में आप रज़ियल्लाहु अन्हो शरीक हुए। कुफ़्फ़ार से लड़े और (अहमद) मुख़्तार सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद की। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त ख़लीफ़ा बनाए गए जब मुनाफ़िक़ों की एक जमाअत मुर्तद हो गई और बहुत से काज़िबों ने दावा-ए-नुबूव्वत कर दिया जिस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो उनसे जंग-ओ-जदाल करते रहे यहां तक कि मुल्क में दुबारा अमन-ओ-अमान हो गया और फ़िल्ला प्रदाज़ों का गिरोह अपमानित हुआ।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौत हुए और सय्यदुल अंबिया और मासूमों के इमाम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की क़ब्र के पहलू में दफ़न किए गए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुदा के हबीब और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जुदा न हुए। न ज़िंदगी में और न मौत के बाद। कुछ सीमित दिनों की मुफ़ारिक़त के बाद आपस में मिल गए और मुहब्बत का तोहफ़ा पेश किया। इंतेहाई ताज्जुब की बात यह है कि बाक़ौल उन (शिया हज़रात) के "यानी एतराज़ करने वालों के" अल्लाह ने नबी के स्थान और पद्वी को ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और दो काफ़िरों, ग़ासिबों और चोरों के मध्य समान कर दिया। और अपने नबी और हबीब सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इन दोनों (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो) की हम-साएगी की अज़ीयत से नजात नहीं दी। बल्कि इन दोनों को दुनिया और आख़िरत में आपके कष्ट देने वाला साथी बना दिया और (नऊज़ूबिल्लाह) (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) इन दोनों नापाकों से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दूर नहीं रखा। हमारा रब उनकी वर्णन करदा बातों से पाक है।" जो ये कहते हैं ये ग़लत कहते हैं। ये ऐसा नहीं है जैसा वर्णन किया जाता है "बल्कि अल्लाह ने इन दोनों पाक-बाज़ों को' अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को" इन दोनों पाक-बाज़ों को पाक-बाज़ों के इमाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मिला दिया। निसंदेह इस में अहल-ए-बसीरत के लिए निशानात हैं।"

(सिररूल खिलाफ़ा अनुवादक पृष्ठ : 72-73)

फिर आप द्वेष रखने वाले शीयों के बारे में फ़रमाते हैं कि

"अगर मुतअस्सिब शीयों से यह पूछा जाए कि मुख़ालिफ़ मुनकिरों की जमाअत से निकल कर बालिग़ मर्दों में से इस्लाम लाने वाला पहला शख़्स कौन था? तो उन्हें यह कहने के सिवा चारा नहीं कि वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थे"

फिर जब यह पूछा जाए कि वह कौन था जिसने सबसे पहले हज़रत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हिज्रत की और तमाम ताल्लुक़ात को पीछे छोड़ डाला और वहां चले गए जहां हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम गए थे तो उनके लिए उस के सिवा कोई चारा नहीं होगा कि वह कहें कि वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थे फिर जब यह पूछा जाए कि ब-फरज़-ए-मुहाल ग़ासिब ही सही ताहम ख़लीफ़ा बनाए जाने वालों में से पहला कौन था? तो उन्हें यह कहे बग़ैर कोई चारा न होगा कि अबू बकर। फिर जब यह पूछा जाए कि मुल्क मुल्क में इशाअत के लिए क़ुरआन को जमा करने वाला कौन था? तो निसंदेह कहेंगे कि वह (हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो) थे। फिर जब यह पूछा जाए कि ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पहलू में कौन दफ़न हुए तो यह कहे बग़ैर उन्हें कोई चारा न होगा कि वह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। तो फिर कितने ताज्जुब की बात है कि (मआज़-अल्लाह) हर फ़ज़ीलत काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों को दे दी गई और इस्लाम की तमाम-तर ख़ैर-ओ-बरकत दुश्मनों के हाथों से ज़ाहिर हुई।

क्या कोई मोमिन यह ख़्याल कर सकता है कि वह शख़्स जो इस्लाम के लिए प्रथम भय रखने वाला था वह काफ़िर और झूठा था? फिर वह कि जिस ने ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ सबसे पहले हिज्रत की वह बेईमान और मुर्तद था? इस तरह तो हर फ़ज़ीलत काफ़िरों को हासिल हो गई। यहां तक कि सय्यद ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ब्र की हम-साएगी भी!"

(सिररूल खिलाफ़ा अनुवादक पृष्ठ : 75-76)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "सच्च तो यह है कि (अबू बकर) सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो और (उम्र) फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों अकाबिर सहाबा में से थे। इन दोनों ने अदायगी हुक़ूक़ में कभी कोताही नहीं की। उन्होंने तक़्वा को अपनी राह और अदल को अपना मक़सूद बना लिया था। वह हालात का गहरा जायज़ा लेते और इसरार की कुनह तक पहुंच जाते थे। दुनिया की ख़ाहिशात का हुसूल कभी भी उनका मक़सूद नहीं था। उन्होंने अपने नफ़ूस को अल्लाह की इताअत में लगाए रखा। कसरत-ए-फ़्यूज़ और नबी अल् सलकेन के दीन की ताईद में शेख़ीन (यानी अबू बकर और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो) जैसा मैं ने किसी को न पाया। यह दोनों ही आफताब (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की इत्तिबा में माहताब से भी ज़्यादा सरीउल-हरकत थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में फ़ना थे। उन्होंने हक़ के हुसूल की ख़ातिर हर तकलीफ़ को शीरीं जाना और इस नबी की ख़ातिर जिसका कोई सानी नहीं, हर ज़िल्लत को अपमान को गवारा किया। और काफ़िरों और मुनकिरों के लश्करों और क़ाफ़िलों से मुठभेड़ के वक़्त शेरों की तरह सामने आए। यहां तक कि इस्लाम ग़ालिब आ गया। और दुश्मन की जमईयतों ने हज़ीमत उठाई। शिर्क छट गया और इसका अंत हो गया और मिल्लत-ओ-मज़हब का सूरज जगमग-जगमग करने लगा और मक़बूल दीनी ख़िदमात बजा

लाते हुए और मुस्लमानों की गर्दनों को लुतफ़-ओ-एहसान से ज़ेरे बार करते हुए इन दोनों का अंजाम ख़ैरुल मुरसैलीन की हम-साएगी पर मुंतिज हुआ।"

फिर आप फ़रमाते हैं

"...अल्लाहु-अकबर इन दोनों (अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उमर रज़ियल्लाहु अन्हो) के सिदक़-ओ-ख़ुलूस की क्या बुलंद शान है। वे दोनों ऐसे (मुबारक) मदफ़न में दफ़न हुए कि अगर मूसा और ईसा ज़िंदा होते तो ब-सद रशक वहां दफ़न होने की तमन्ना करते लेकिन यह मुक़ाम महज़ तमन्ना से तो हासिल नहीं हो सकता और न केवल ख़ाहिश से अता किया जा सकता है बल्कि यह तो बारगाहे रब की तरफ़ से एक अज़ली रहमत है।"

(सिररूल खिलाफ़ा अनुवादक पृष्ठ 77-78 रुहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 345-346)

इन शा अल्लाह कुछ हिस्सा, हवाले और हैं। इन शा अल्लाह आइन्दा पेश होंगे।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

-धूपों के मारे हुए और तीव्र गर्मी वाली दोपहर के जलाए हुए की भांति थी। फिर अल्लाह ने उसे उन समस्त कष्टों से मुक्ति प्रदान की और उन समस्त आपदाओं से उसे छुटकारा दिलाया और अदभुत से अदभुत समर्थनों द्वारा उसकी सहायता की यहां तक कि इस्लाम अपनी हताशा और धूल में लथड़े होने के बाद बादशाहों का इमाम और गर्दनों (जनसामान्य) का मालिक बन गया। तो मुनाफ़िकों की ज़ुबानें गूंगी हो गईं और मोमिनों के चेहरे चमक उठे। हर व्यक्ति ने अपने रब्ब की प्रशंसा और सिद्दीक़ (अकबर[रज़ि॰]) का धन्यवाद अदा किया। (सिर्रुल-ख़िलाफ़त (अनुवादक पृष्ठ : 52)

फिर आप फ़रमाते हैं

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि॰] ने इस्लाम को एक ऐसी दीवार की तरह पाया जो बुरे लोगों की बुराई के कारण गिरना ही चाहती थी। तब अल्लाह ने आप के हाथों से उसे एक ऐसे सुदृढ़ क़िले की तरह बना दिया जिसकी दीवारें लोहे की हों और जिसमें दासों की तरह आज्ञाकारी सेना हो। अतः विचार कर। क्या तू इसमें कोई सन्देह पाता है? या फिर इस का उदाहरण तू दूसरे गिरोहों में से प्रस्तुत कर सकता है?

(सिर्रुलख़िलाफ़त (अनुवादक) पृष्ठ : 54)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"आप[रज़ि॰] पूर्ण मारिफ़त रखने वाले ख़ुदा के अध्यात्म ज्ञानी (आरिफ़ बिल्लाह), बड़े शालीन स्वभाव, और अत्यन्त मेहरबान (कृपालु) स्वभाव के मालिक थे। विनम्रता और निराश्रयता की हालत में जीवन व्यतीत करते थे। बहुत ही क्षमा करने वाले और साक्षात दया और रहमत थे। आप[रज़ि॰] अपने मस्तक के प्रकाश से पहचाने जाते थे, आप का हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गहरा संबंध था और आप की रूह ख़ैरुलवरा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रूह से जुड़ी हुई थी और जिस प्रकाश ने आप के आक़ा-व-अनुकर्णीय और ख़ुदा के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ढांपा हुआ था और आप रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रकाश के उत्तम साए तथा आप के महान लाभों के नीचे छुपे हुए थे और क़ुर्आन समझने तथा रसूलों के सरदार तथा मानव जाति के गर्व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम में आप समस्त लोगों से विशिष्ट थे और जब आप पर आख़िरत का जीवन तथा ख़ुदा तआला के रहस्य प्रकट हुए तो आप ने समस्त सांसारिक संबंध तोड़ दिए। और शारिरिक बन्धनों को दूर फेंक दिया तथा आप अपने प्रियतम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रंग में रंगीन हो गए और एक बांछित हस्ती के लिए हर मनोकामना को त्याग दिया तथा समस्त शारीरिक गंदगियों से आप का नफ़्स पवित्र हो गया और सच्चे अद्वितीय ख़ुदा के रंग में रंगीन हो गया और रब्बुल आलमीन (समस्त लोकों के रब्ब) की प्रसन्नता में खो गया। और जब ख़ुदा की सच्ची मुहब्बत आप के सम्पूर्ण शरीर तथा दिल की असीम गहराइयों में और अस्तित्व के हर कण में बस गई और आप के कार्यों तथा कथनों, में उठने--बैठने में उसके प्रकाश प्रकट हो गए तो आप सिद्दीक़ के नाम से नामित हुए और आप को अत्यन्त समृद्धि से तरोताज़ा तथा गहरा ज्ञान, समस्त प्रदान करने वालों में से उत्तम प्रदान करने वाले ख़ुदा के दरबार से प्रदान किया गया। सच्चाई आप की एक सुदृढ़ महारत और स्वाभाविक विशेषता थी तथा इस सच्चाई के लक्षण और प्रकाश आप[रज़ि॰] में तथा आप[रज़ि॰] की हर कथनी-करनी, गति और ठहराव और व्यक्तित्व में प्रकट हुए। आप आकाशों और ज़मीनों के प्रतिपालक की ओर से इनाम पाने वाले गिरोह में सम्मिलित किए गए। आप किताब-ए-नुबुव्वत की एक संक्षिप्त प्रति थे और आप श्रेष्ठ लोगों और शूरवीरों (बहादुरों) के इमाम थे तथा नबियों का स्वभाव रखने वाले चुने हुए लोगों में से थे।

तू हमारे इस कथन को किसी प्रकार की अतिश्योक्ति न समझ कर और न ही उसे नर्म आचरण एवं माफ़ करने के प्रकार से चरितार्थ कर और न ही उसे प्रेम के श्रोत से फूटने वाला समझ बल्कि यह वह वास्तविकता है जो ख़ुदा के दरबार से मुझ पर प्रकट हुई और आप[रज़ि॰] का मत समस्त प्रतिपालकों के प्रतिपालक पर भरोसा करना और सामानों की ओर कम ध्यान देना था और समस्त शिष्टाचार में हमारे रसूल और आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िल्ल (प्रतिबिम्ब) के तौर पर थे और आप को हज़रत ख़ैरुलबरीयः सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक अनादि अनुकूलता थी तथा यही कारण था कि आप को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ से पल भर में वह कुछ प्राप्त हो गया जो दूसरों को लम्बे समयों और बहुत दूर के महाद्वीपों में प्राप्त न हो सका। तू जान ले कि लाभ किसी मनुष्य की ओर केवल अनुकूलताओं के कारण ही मुंह करते हैं और सम्पूर्ण कायनात में अल्लाह की सुन्नत इसी प्रकार जारी और प्रचलित है। अतः जिस मनुष्य को क़िस्मत (भाग्य) लिखने वाले ने वलियों और सूफ़ियों के साथ थोड़ा सा भी संबंध प्रदान न किया हो तो यही वह दुर्भाग्य है जिसे अल्लाह तआला के दरबार में निर्दयता और दुर्भाग्य समझा जाता है। सर्वांगपूर्ण सौभाग्यशाली वही मनुष्य है जिसने ख़ुदा के मित्र सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदतों को घेरे में लिया हुआ हो यहां तक कि शब्दों, बातों और समस्त तौर-तरीक़ों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से समानता पैदा कर ली हो। अभागे लोग तो उस ख़ूबी को समझ नहीं सकते, जिस प्रकार एक जन्मजात अंधा रंगों और शक्लों को देख नहीं सकता। एक अभागे के भाग्य में तो ख़ुदा के रोब और भययुक्त चमकारों के अतिरिक्त कुछ नहीं होता क्योंकि उसकी प्रकृति रहमत के निशान नहीं देख सकती और जज़्ब और मोहब्बत थी सुगंध को नहीं सूंघ सकती और यह नहीं जानती कि निष्कपटता, भलाई, प्रेम तथा दिल की समृद्धि क्या हैं। क्योंकि वह (प्रकृति) तो अंधकारों से भरी हुई है फिर उसमें बरकतों के प्रकाश उतरें तो कैसे? बल्कि दुर्भाग्यशाली व्यक्ति का नफ़्स तो एक तीव्र और प्रचंड आंधी की मौजों (लहरों) की तरह मौजें मारता है और उसकी भावनाएं सच और सच्चाई देखने से उसे रोकती हैं। इसलिए वह भाग्यशाली लोगों की तरह मारिफ़त में आकर्षित होते हुए (हक़) की ओर नहीं आता जबकि सिद्दीक़[रज़ि॰] की उत्पत्ति फैज़ के स्रोत की ओर ध्यान देने रहमान ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर मुंह करने की स्थिति में हुई। आप नुबुव्वत की विशेषताओं के प्रकटन के समस्त मनुष्यों से अधिक अधिकारी (हक़दार) थे और हज़रत ख़ैरुलबरीयः सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा बनने के लिए उचित थे तथा अपने अनुकर्णीय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पूर्ण एकता और पूर्ण अनुकूलता सुदृढ़ करने के पात्र थे और यह कि वे समस्त शिष्टाचार, गुण और आदतों को अपनाने तथा व्यक्तिगत एवं सांसारिक संबंधों को छोड़ने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के (ऐसे पूर्ण) द्योतक थे कि तलवारों और भालों के ज़ोर से भी उनके मध्य संबंध न कट सके, और आप इस हालत पर हमेशा क़ायम रहे और संकटों तथा भयभीत करने वाली हालतों और लानत एवं निन्दा में से आप को कुछ भी बेचैन न कर सके। आप की रूह के जौहर में सच्चाई और वफ़ादारी, दृढ़ता और संयम दाखिल था, चाहे सम्पूर्ण संसार मुर्तद हो जाए आप उनकी परवाह न करते और न पीछे हटते बल्कि हर समय अपना क़दम आगे ही बढ़ाते गए।

(सिर्रुलख़िलाफ़त (अनुवादक) पृष्ठ 101 से 105)

ये थे हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो जिन्हों ने अल्लाह तआला और उस के रसूल की मुहब्बत में अपने आपको फ़ना कर दिया था।

बदरी साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन में यह आख़िरी वर्णन था जो चल रहा था वह अब ख़त्म हुआ।

शायद बाअज़ सहाबा जो मैंने शुरू में वर्णन किए थे उनकी बाअज़ तफसीलें बाद में आई हैं वह कभी मौक़ा मिला तो वर्णन कर दूँगा। नहीं तो जब बदरी साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की इशाअत होगी इस में इन सहाबा की भी वह तफ़सील छप जाएगी।

अल्लाह तआला हमें इन साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के नक़्श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हर तरफ़ सितारों की तरह यह हमारी राहनुमाई करने वाले हों और जो मयार उन्होंने क़ायम किए हम भी इन मयारों को क़ायम करने की कोशिश करने वाले हों।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

"आप रज़ियल्लाहु अन्हो किताब-ए-नबुव्वत का एक अजमाली नुस्ख़ा थे" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"आप रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताएं सूरज की तरह चमकती हैं"

"हज़रत सिद्दीक़ का प्रिय व्यक्तित्व आशा और भय, भय और इच्छा, मानव और प्रेम का एक संयोजन था, और उनकी प्रकृति का सार ईमानदारी और पवित्रता में परिपूर्ण था, और यह पूरी तरह से हज़रत किबरिया से पूर्णतः झुका हुआ था।"

"आपकी आत्मा के सार में ईमानदारी, दृढ़ता और पवित्रता थी। भले ही सारे धर्मत्यागी हो गए, आपने उनकी परवाह नहीं की और पीछे नहीं हटे, बल्कि हमेशा आगे बढ़ते रहे।"
नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो के अलावा अपने किसी साथी का नाम सिद्दीक़ नहीं लिया, ताकि यह आप की स्थिति और महानता को प्रदर्शित करे।"

"आपकी सारी खुशी इस्लाम की बुलंदी और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नेक शब्दों का पालन करने में गुज़री थी
"आपने इस्लाम को एक कमज़ोर और कमसिन और असहाय व्यक्ति के रूप में पाया, फिर आप इसकी विशेषज्ञ, इसकी भव्यता और ताजगी को वापस लाने के लिए उठ खड़े हुए और एक लुटे हुए व्यक्ति की तरह अपनी खोई हुई चीज़ को खोजने में लगे रहे यहाँ तक के इस्लाम ने अपनी ऊंचाई पर लौट आया, उसका कोमल चेहरा, उसकी रसीली सुंदरता और उसके साफ पानी की मिठास और ये सब अमीन के इस नौकर की ईमानदारी के कारण हुआ।
मुझे पता है कि कोई भी मोमिन और मुसलमान नहीं बन सकता जब तक अबू बकर, उमर, उस्मान, अली रज़ियल्लाहु अन्हो जैसा रंग पैदा न हो उन्हें दुनिया से प्यार नहीं था, लेकिन उन्होंने अपना जीवन सर्वशक्तिमान ईश्वर के मार्ग में समर्पित कर दिया।

"आपकी श्रेष्ठता एक त्वरित निर्णय और एक मजबूत पाठ से सिद्ध होती है, और आपकी महानता एक निश्चित तर्क से स्पष्ट होती है, और आपकी धार्मिकता उज्ज्वल दिन की तरह उज्ज्वल होती है।"
आपने आख़रत की नेमतों को प्राथमिकता दी और इस दुनिया की बेशकीमती नेमतों को छोड़ दिया, आपके इन गुणों को कोई और हासिल नहीं कर सकता।
हज़रतअबू बकर इस्लाम के दूसरे आदम हैं।
आप, रज़ियल्लाहु अन्हो, पूर्ण ज्ञानी आरिफ बल्लाह था, बहुत ही कोमल स्वभाव और बहुत ही दयालु स्वभाव वाले थे।
और वह तपस्या और दरिद्रता की स्थिति में रहते थे, वे बहुत क्षमाशील और करुणा और दया के अवतार थे।

"आप नबी तो नहीं थे, लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो में नबियों की विशेषताएं मोजूद थी। यह आपकी ईमानदारी का कारण था कि इस्लाम अपने पूर्ण गौरव पर वापस आ गया।"
और बाणों के सदमात के बाद सुंदर, भरा हरा-भरा हो गया और सभी प्रकार के सुखद फूल खिल गए और उसकी शाखाएं धूल से साफ हो गईं।

"आप सिद्दीक के रूप में जाने जाते हैं और आप ताज़ा और गहन ज्ञान के सर्वश्रेष्ठ दाता हैं, सभी देने वालों में सर्वश्रेष्ठ हैं।"
अल्लाह की ओर से दी गई, सत्यनिष्ठा एक विशेष गुण और आपकी विशेषता थी, और आप में और आपके हर शब्द और कर्म में इस सत्यता के संकेत और रोशनी प्रकट हुई।
आप आसमानों और ज़मीन के रब की ओर से इनाम पाने वाले समूह में शामिल थे।
वह पैगंबर की किताब का एक संक्षिप्त संस्करण था, और वह उत्कृष्टता का स्वामी और युवकों का इमाम था, और वह उन प्रतिष्ठित लोगों में से एक था, जिनके पास नबियों का चरित्र था।
बद्री साहब का यह आख़िरी वर्णन था, जो चल रहा था, वह अब ख़त्म हो गया ... अल्लाह हमें इन सहाबा के क़दमों पर चलने का अवसर दे।
हर जगह सितारों की तरह, वे हमारे मार्गदर्शक बनें और वे जो मानक निर्धारित करें हैं, हम उन्हें स्थापित करने का प्रयास करेंगे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 09 दिसम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ इक़तेबासात पेश किए थे। इस बारे में आप के कुछ और इर्शादात हैं, पेश करता हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं निस्सन्देह अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि॰] और उमर फ़ारूक[रज़ि॰] उस कारवां के थे जिसने अल्लाह के लिए ऊंची चोटियों पर विजय प्राप्त की और उन्होंने सभ्य तथा ख़ानाबदोशों को सच की दावत दी, यहां तक कि उन की यह दावत दूर के देशों तक फैल गई। इन दोनों की ख़िलाफ़त में बड़ी प्रचुरता से इस्लाम के फल दिए गए और कई प्रकार की सफलताओं एवं कामयाबियों के साथ पूर्ण सुगंध से सुगंधित की गई

और इस्लाम सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] के काल में विभिन्न प्रकार के (उपद्रवों की) आग से पीड़ित था और निकट था कि खुली-खुली लूट-मार करके उस की जमाअत पर आक्रमणकारी हों। और उसके लूट लेने पर विजय के नारे लगाएं तो ठीक उस समय हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि॰] की सच्चाई के कारण प्रतापी रब्ब इस्लाम की सहायता को आ पहुंचा और गहरे कुएं से उस का प्रिय सामान निकाला। अतः इस्लाम दुर्दशा की पराकाष्ठ से उत्तम हालत की ओर लौट आया। तो इन्साफ़ हम पर यह अनिवार्य करता है कि हम उस सहायक का धन्यवाद अदा करें और दुश्मनों की परवाह न करें। अतः तू उस व्यक्ति की उपेक्षा न कर जिसने तेरे सय्यिद-व-मौला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहायता की और तेरे धर्म और घर की रक्षा की और ख़ुदा के लिए तेरी अच्छाई चाही और तुझ से बदला न चाहा तो फिर बड़े आश्चर्य का स्थान है कि हज़रत सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] की बुज़ुर्गी से कैसे इन्कार किया जा सकता है? और यह वास्तविकता है कि आप की प्रशंसनीय विशेषताएं सूर्य के समान चमकने वाली हैं और निस्सन्देह मोमिन आप के वृक्ष के लगाए हुए फल खाता और आप के पढ़ाई हुई विद्याओं लाभान्वित हो रहा है। आप न हमारे धर्म के लिए फ़ुर्क़ान तथा हमारी दुनिया के लिए अमन-व-अमान प्रदान किया और जिसने इस से इन्कार किया तो उसने झूठ बोला और मृत्यु तथा शैतान से जा मिला। और जिन लोगों पर आप का पद एवं मर्तबा संदिग्ध रही ऐसे लोग जान बूझ कर ग़लती पर हैं और उन्होंने अधिक पानी को थोड़ा जाना। अतः वे क्रोध से उठे और ऐसे व्यक्ति का तिरस्कार किया जो प्रथम श्रेणी का आदरणीय और सम्माननीय था। और हज़रत सिद्दीक़[रज़ि॰] की महान हस्ती आशा तथा भय, डर और शौक़, स्नेह और प्रेम की संग्रहीता थी और आप की प्रकृति का जौहर श्रद्धा एवं निष्ठा में सर्वांगपूर्ण था और अल्लाह तआला की ओर पूर्ण रूप से कट चुका था तथा नफ़्स और उसके आनन्दों से खाली और इच्छाओं एवं लोलुपताओं और उस की भावनाओं से पूर्णतया दूर था और आप असीम श्रेणी के संसार से विरिक्त थे और आप से सुधार ही जारी हुआ तथा आप[रज़ि॰] से मोमिनों के लिए भलाई और कल्याण ही प्रकट हुआ। आप कष्ट एवं दुःख देने के आरोप से पवित्र थे। इसलिए तू आन्तरिक विवादों की ओर न देख बल्कि उन्हें भलाई की पद्धति पर चरितार्थ कर। क्या तू विचार नहीं करता कि वह व्यक्ति जिस ने अपने रब्ब के आदेशों और प्रसन्नता से अपना ध्यान अपने बेटे, बेटियों की ओर नहीं फेरा ताकि वह उन्हें धनाढ्य बनाएं या उन्हें अपने कर्मचारियों में से बनाएं। और जिसने दुनिया से केवल इतना ही हिस्सा लिया जितना उसकी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त था तो फिर तू कैसे सोच सकता है कि उसने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सन्तान पर अत्याचार वैध रखा होगा। (सिररूल खिलाफ़ा (अनुवादक) पृष्ठ 79 से 82

फिर आप फ़रमाते हैं : अल्लाह सिद्दीक़ (अकबर[रज़ि॰]) पर रहमतें उतारे कि आप ने इस्लाम को जीवित किया और नास्तिकों को मारा और क़यामत तक के लिए अपनी नेकियों का बड़ा लाभ जारी कर दिया। आप बहुत रोने वाले और ख़ुदा की तरफ़ लौ लगाने वाले थे और विनय, दुआ, ख़ुदा के आगे गिरे रहना उसके दरवाज़े पर रोने तथा विनीतता से झुके रहना और उसकी चौखट को दृढ़ता पूर्वक थामे रखना आप की आदत थी। आप सज्दे की अवस्था में दुआ में पूरा ज़ोर लगाते तथा तिलावत (क़ुर्आन को ऊंची आवाज़ में पढ़ने) के समय रोते थे। आप निस्सन्देह इस्लाम और रसूलों के गर्व हैं। आप की प्रकृति का जौहर ख़ैरुल बरीयः सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रकृति के जौहर के बहुत क़रीब था। आप[रज़ि॰] नुबुव्वत की सुगंधों को स्वीकार करने के लिए तैयार लोगों में से प्रथम थे। हाशिर (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से क़यामत के समान जो रूहानी हश्र (क़यामत के दिन मुर्दों का उठना) प्रकट हुआ आप[रज़ि॰] उसके देखने वालों में सर्वप्रथम थे और उन लोगों में से पहले थे जिन्होंने मैल से अटी चादरों को पवित्र और स्वच्छ लिबासों से बदल दिया और नबियों की अधिकांश आदतों में नबियों के समान थे। हम क़ुर्आन करीम में आप की चर्चा के अतिरिक्त किसी अन्य (सहाबी) की चर्चा के अतिरिक्त किसी अन्य (सहाबी) की चर्चा कल्पना तथा गुमान करने वालों के गुमान के अलावा अटल और निश्चित तौर पर मौजूद नही पाते और गुमान वह चीज़ है जो सच के तुलना में कोई हैसियत नहीं रखता। और न ही वह (सच के) अभिलाषियों को सैराब (तृप्त) कर सकता है तथा जिसने आप से दुश्मनी की तो ऐसे व्यक्ति और सच के बीच एक ऐसा बन्द दरवाज़ा बाधक है जो कभी भी सिद्दीक़ों के सरदार की तरफ़ रुजू किए (लौटे) बिना न खुलेगा।

(सिररूल खिलाफ़ा (अनुवादक) सफ़ा 99-100)

फिर आप फ़रमाते हैं :सिद्दीक़[रज़ि॰] की उत्पत्ति फैज़ के स्रोत की ओर ध्यान देने रहमान ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर मुंह करने की स्थिति में हुई। आप नुबुव्वत की विशेषताओं के प्रकटन के समस्त मनुष्यों से अधिक अधिकारी (हक़दार) थे और हज़रत ख़ैरुलबरीयः सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा बनने के लिए उचित थे तथा अपने अनुकर्णीय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पूर्ण एकता और पूर्ण अनुकूलता सुदृढ़ करने के पात्र थे और यह कि वे समस्त शिष्टाचार, गुण और आदतों को अपनाने तथा व्यक्तिगत एवं सांसारिक संबंधों को छोड़ने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के (ऐसे पूर्ण) द्योतक थे कि तलवारों और भालों के ज़ोर से भी उनके मध्य संबंध न कट सके, और आप इस हालत पर हमेशा क़ायम रहे और संकटों तथा भयभीत करने वाली हालतों और लानत एवं निन्दा में से आप को कुछ भी बेचैन न कर सके। आप की रूह के जौहर में सच्चाई और वफ़ादारी, दृढ़ता और संयम दाखिल था, चाहे सम्पूर्ण संसार मुर्तद हो जाए आप उनकी परवाह न करते और न पीछे हटते बल्कि हर समय अपना क़दम आगे ही बढ़ाते गए।

इसी कारण से अल्लाह ने नबियों के तुरन्त बाद सिद्दीक़ों की चर्चा को रखा और -फ़रमाया

فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ

तो यही वे लोग हैं जो उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम किया है (अर्थात) नबियों में से, सिद्दीक़ों में से, शहीदों में से और सालिह (नेक) लोगों में से। (अन्निसा-70)

और इस (आयत) में सिद्दीक़ (अकबर[रज़ि॰]) तथा आप की दूसरों पर श्रेष्ठता के संकेत हैं, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा[रज़ि॰] में से आप के अतिरिक्त किसी सहाबी का नाम सिद्दीक़ नहीं रखा ताकि वह आपके पद और प्रतिष्ठा को प्रकट करे। इसलिए सोच-विचार करने वालों के समान विचार कर। इस आयत में साधकों (सालिकों) के लिए खूबियों की श्रेणियां और उनकी योग्यता रखने वालों की ओर बहुत बड़ा संकेत है। जब हमने इस आयत पर विचार किया और सोच को चरम सीमा तक पहुंचाया तो यह प्रकट हुआ कि यह आयत (अबू बक्र) सिद्दीक[रज़ि॰] की ख़ूबियों पर सबसे बड़ी गवाह है और इसमें एक गहरा राज़ है जो हर उस मनुष्य पर प्रकट होता है जो अनुसंधान की ओर झुकता है। अतः अबू बक्र[रज़ि॰] वह हैं जिन्हें रसूल मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबान (मुबारक) से सिद्दीक़ की उपाधि प्रदान की गई और फ़ुर्क़ान (हमीद) ने सिद्दीक़ों को नबियों के साथ मिलाया है जैसा कि बुद्धिमानों पर छुपा नही। हम सहाबा[रज़ि॰] में से किसी एक सहाबी पर भी इस संबोधन और उपाधि का चरितार्थ नहीं पाते। इस प्रकार सिद्दीक़ अमीन की श्रेष्ठता सिद्ध हो गयी। क्योंकि नबियों के बाद आप के नाम का वर्णन किया गया है।

(सिर्रुलख़िलाफ़त (अनुवादक सफ़ा104 ता107)

फिर आप फ़रमाते हैं "इबन ख़ुलदून कहते हैं कि "जब आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तकलीफ़ बढ़ गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बेहोशी तारी हो गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अज़्वाज और दीगर अहल-ए-बैत, अब्बास और अली आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जमा हो गए। फिर नमाज़ का वक़्त हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अबू बकर से कह दें कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ा दें।"(अल् जुज़ सानी पृष्ठ 62) आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "इब्ने ख़ुलदून कहते हैं कि "फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बातों की वसीयत करने के बाद फ़रमाया अबू बकर के दरवाज़े के सिवा मस्जिद में खुलने वाले सब दरवाज़े बंद कर दो ! क्योंकि मैं तमाम सहाबा में एहसान में किसी को भी अबू बकर से ज़्यादा अफ़ज़ल नहीं जानता।" (अल् जुज़ सानी पृष्ठ 62)

फिर आप फ़रमाते हैं कि "इब्ने ख़ुलदून ने वर्णन किया है कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे से चादर हटाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बोसा दिया कहा : मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान, अल्लाह ने जो मौत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए मुक़द्दर की थी उस का मज़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चख लिया। लेकिन अब उस के बाद कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर मौत नहीं आएगी। (अल् जुज़ सानी सफ़ा 62)

फ़रमाते हैं कि "अल्लाह के लतीफ़ एहसानात में से जो उसने आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर फ़रमाए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कमाल क़ुरब की जो विशेषता आप रज़ियल्लाहु अन्हो को हासिल थी, जैसा कि इब्ने ख़ुलदून ने वर्णन किया है वह यह थी कि

अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उसी चारपाई पर उठाए गए जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उठाया गया था। और आप रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ब्र को भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र की तरह हमवार बनाया गया। और सहाबा ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो की लहद को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लहद के बिल्कुल क़रीब बनाया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के सिर को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोनों कंधों के बराबर रखा।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो आख़िरी कलिमा अदा फ़रमाया वह यह कि (हे अल्लाह!) मुझे मुस्लिम होने की हालत में वफ़ात दे और मुझे सालहीन में शामिल फ़र्मा। (पृष्ठ 176) (सिर्रुलख़िलाफ़त (अनुवादक पृष्ठ 189-190 हाशिया)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : अबू बक्र रज़ियल्लाहु दुनिया भर में श्रेष्ठ, ख़ुदा वाले एक इन्सान थे, जिन्होंने अंधकारों के बाद इस्लाम के चेहरे को चमक प्रदान की, और आपका पूर्ण प्रयास यही रहा कि जिसने इस्लाम को छोड़ा आपने उस से मुक़ाबला किया और जिसने सच से इन्कार किया आपने उस से युद्ध किया और जो इस्लाम के घर में प्रवेश कर गया उससे नर्मी और हमदर्दी का व्यवहार किया। आप ने इस्लाम के प्रसार के लिए कष्ट सहन किए, आपने सृष्टि को दुर्लभ मोती प्रदान किए, और अपने शुभ संकल्प से ख़ानाबदोशों को परस्पर मिल जुल कर रहना सिखाया और निरंकुशों को खान-पान, उठने-बैठने के नियम और नेकी के मार्गों की खोज तथा युद्धों में डींगे मारने के नियम सिखाए इसी

प्रकार रास्तों का सुदृढ़ किया। और आपने हर ओर निराशा देख कर भी किसी से युद्ध के बारे में नहीं पूछा बल्कि आप हर मुक़ाबला करने वाले से युद्ध करने के लिए उठ खड़े हुए। हर कायर और बीमार व्यक्ति की तरह आपको विचारों ने बहकाया नहीं, हर फ़साद और संकट के अवसर पर सिद्ध हो गया कि आप को रिज़्वा पर्वत से अधिक दृढ़ और मज़बूत हैं। आप ने हर उस व्यक्ति को जिसने नुबुव्वत का झूठा दावा किया मार दिया और अल्लाह तआला के लिए समस्त संबंधो को दूर फेंक दिया। आप की सम्पूर्ण प्रसन्नता इस्लाम के कलिमे को बुलन्द करने और सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण में थी। अतः अपने धर्म की रक्षा करने वाले (हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु का दामन थाम ले और अपना बकवास करना छोड़ दे। और मैंने जो कुछ कहा है वह इच्छाओं का अनुकरण करने वाले व्यक्ति की तरह या बाप-दादों के विचारों का अनुकरण करने वाले की तरह नहीं कहा बल्कि जब से मेरे क़दम ने चलना और मेरे क़लम ने लिखना प्रारंभ किया मुझे यही प्रिय रहा कि मैं अन्वेषण को अपनी पद्धति और सोच-विचार को अपना उद्देश्य बनाऊं। अतः मैं हर ख़बर की छान-बीन करता और ज्ञान-विशेषज्ञ से पूछता। तो मैंने सिद्दीक़ (अकबर रज़ि.) को (वास्तव में) सिद्दीक़ पाया। और अनुसंधान की दृष्टि से मुझ पर यह बात प्रकट हुई जब मैंने आप को समस्त इमामों का इमाम, तथा धर्म और उम्मत का दीपक पाया। तब मैंने आप रज़ियल्लाहु की रकाब (घोड़े की काठी के नीचे पैर रखने का पायदान) को मज़बूती से थाम लिया और आप रज़िय-ल्लाहु की सुरक्षा में शरण ली और नेक लोगों से प्रेम करके अपने रब्ब की दया प्राप्त करनी चाही। तो उस (दयालु ख़ुदा) ने मुझ पर दया की, शरण दी, मेरी सहायता की और मेरी तर्बियत (प्रशिक्षण) की, तथा मुझे प्रतिष्ठित लोगों में से बनाया और अपनी विशेष दया से उसने मुझे इस सदी का मुजद्दिद और मसीह मौऊद बनाया तथा मुझे मुल्हमों में से बनाया। मुझ से चिन्ता को दूर किया मुझे वह कुछ दिया जो संसार में किसी और को नहीं दिया। यह सब उस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी (अनपढ़) और उन सानिध्य प्राप्त लोगों के प्रेम के कारण प्राप्त हुआ। हे अल्लाह! तू अपने रसूलों में सर्वश्रेष्ठ और अपने ख़ातमुल अंबिया तथा दुनिया के समस्त मनुष्यों से उत्तम अस्तित्व मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद और सलाम भेज।

ख़ुदा की क़सम (हज़रत) अबू बक्र रज़ियल्लाहु हर्मेन में भी और दोनो क़ब्रों में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी हैं। इस से मेरा अभिप्राय एक तो गुफ़ा की क़ब्र है जिसमें आप ने विवशता की हालत में मृत्यु प्राप्त व्यक्ति की भांति शरण ली। और फिर (दूसरी) वह क़ब्र जो मदीने में सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्र के साथ मिली हुई है। इसलिए सिद्दीक (अकबर रज़ियल्लाहु) के पद को समझ यदि तू गहरी समझ का मालिक है। अल्लाह ने आप की तथा आप की ख़िलाफ़त की क़ुर्आन में प्रशंसा की और उत्तम वर्णन द्वारा आप की स्तुति की। निस्सन्देह आप अल्लाह के मान्य और प्रिय हैं और आप की प्रतिष्ठा का तिरस्कार किसी सर फिरे व्यक्ति के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। आप की ख़िलाफ़त के द्वारा इस्लाम से समस्त ख़तरे दूर हो गए। और आप की मेरहबानी से मुसलमानों का सौभाग्य पूर्ण हो गया। यदि ख़ैरुल अनाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ) का बहुत ही सच्चा और प्राण न्योछावर करने वाला दोस्त सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] न होता तो क़रीब था कि इस्लाम का स्तंभ ध्वस्त हो जाता। आप ने इस्लाम को एक निर्बल, निराश्रय, कमज़ोर, क्षीण और विकृत व्यक्ति की भांति पाया तो आप विशेषज्ञों की तरह उसकी शोभा और तरोताज़गी को दोबारा वापस लाने के लिए उठ खड़े हुए तथा एक लुटे हुए व्यक्ति के समान अपनी खोई हुई चीज़ की तलाश में व्यस्त हो गए, यहां तक कि इस्लाम अपने संतुलित क़द अपने मुलायम कपोल अपने सौन्दर्य की प्रफुल्लता और अपने निर्मल पानी की मिठास की ओर लौट आया। और यह सब कुछ उस अमानतदार बन्दे की निष्कपटता के कारण हुआ। आप ने नफ़्स को मिट्टी में मिलाया और हालत को बदला और कृपालु ख़ुदा की ख़ुशी के अतिरिक्त किसी प्रतिफल के अभिलाषी न हुए। इसी हालत में आप पर दिन-रात आए। आप गली हुई हड्डियों में जान डालने वाले, आपदाओं को दूर करने वाले और (रेगिस्तान के) मीठे फल वाले वृक्षों को बचाने वाले थे। ख़ुदा की शुद्ध सहायता आप के भाग में आई और यह अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) और दया के कारण था और अब हम एक ख़ुदा पर भरोसा करते हुए कुछ गवाहियों का वर्णन करते हैं ताकि तुझ पर यह बात प्रकट हो जाए कि आप ने क्योंकर तीव्रतम आंधियों वाले फ़ित्नों और झुलसाने वाले शोलों के कष्टों को समाप्त किया और अपने युद्ध में किस प्रकार बड़े-बड़े माहिर भाले चलाने वालों तथा तलवार चलाने वालों को मार दिया। इस प्रकार आप की आन्तरिक हालत आप के कारनामों से प्रकट हो गई और आप के कर्मों ने आपकी प्रशंसनीय विशेषताओं की वास्तविकता पर गवाही दी। अल्लाह आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे और आप को संयमियों के इमामों में उठाया जाए और (अल्लाह) अपने उन प्रियजनों के सद्क़े हम पर दया करे। हे नेमतों तथा कृपाओं के मालिक ख़ुदा? मेरी दुआ स्वीकार कर। तू सर्वाधिक दया करने वाला और तू दयावानों में सर्वोत्तम है।

(उद्धरित सिर्रुलख़िलाफ़त (अनुवादक पृष्ठ 185 से 187 हाशिया)

फिर आप फ़रमाते हैं "हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का नमूना हमेशा अपने सामने रखो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस ज़माना पर ग़ौर करो कि जब दुश्मन क़ुरैश हर तरफ़ से शरारत पर तुले हुए थे और उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल का मन्सूबा किया। वह ज़माना बड़ा इबतिला का ज़माना था। उस वक़्त हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो हक़-ए-रिफ़ाक़त अदा किया उस की नज़ीर दुनिया में नहीं पाई जाती। यह ताक़त और क़ुव्वत बजुज़ सिदक़-ए-ईमान के हरगिज़ नहीं आ सकती।

आज जिस क़दर तुम लोग बैठे हुए हो। अपनी अपनी जगह सोचो कि अगर इस किस्म का कोई इबतेला हम पर आ जाए तो कितने हैं जो साथ देने को हों। उदाहरणतः गर्वनमैंट की तरफ़ से ही यह तफ़तीश शुरू हो जाए कि किस-किस शख़्स ने इस शख़्स की बैअत की है तो कितने होंगे जो दिलेरी के साथ यह कह दें कि हम मुबाईन में दाख़िल हैं। मैं जानता हूँ कि यह बात सुन कर कुछ लोगों के हाथ पांव सुन हो जाऐंगे और उनको फ़ौरन अपनी जायदादों और रिश्तेदारों का ख़्याल आ जाएगा कि उनको छोड़ना पड़ेगा।"

आप फ़रमाते हैं कि "मुश्किलात ही के वक़्त साथ देना हमेशा कामिल ईमान लोगों का काम होता है। इस लिए जब तक इन्सान अमली तौर पर ईमान को अपने अंदर दाख़िल न करे महिज़ क़ौल से कुछ नहीं बनता और बहानासाज़ी उस वक़्त तक दूर ही नहीं होती। अमली तौर पर जब मुसीबत का वक़्त हो तो उस वक़्त साबित-क़दम निकलने वाले थोड़े ही होते हैं। हज़रत मसीह नासरी के हवारी इस आख़िरी घड़ी में जो उनकी मुसीबत की घड़ी थी उन्हें तन्हा छोड़कर भाग निकले और बाअज़ ने तो मुँह के सामने ही आप पर लानत कर दी।"

फिर आप फ़रमाते हैं ".. ग़रज़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का सिदक़ इस मुसीबत के वक़्त ज़ाहिर हुआ जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुहासिरा किया गया। जबकि कुछ कुफ़्फ़ार की राय इख़राज की भी थी परंतु असल मक़सद और कसरत-ए-राय आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल पर थी। ऐसी हालत में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने सिदक़ और वफ़ा का वह नमूना दिखलाया जो सदैव के लिए नमूना रहेगा।

इस मुसीबत की घड़ी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इंतेख़ाब ही हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की सदाक़त और आला वफ़ादारी की एक ज़बरदस्त दलील है। देखो अगर वायसराए हिंद किसी शख़्स को किसी ख़ास काम के लिए इंतेख़ाब कर ले तो उस की राय सायब और बेहतर होगी या एक चौकीदार की? वायसराए अगर इंतेख़ाब करे तो उसकी राय सायब होगी या एक आम चौकीदार की। फ़रमाते हैं कि "मानना पड़ेगा कि वायसराए का इंतेख़ाब बहरहाल मौज़ूं और मुनासिब होगा क्योंकि जिस हाल में कि वह सलतनत की तरफ़ से नायबुल सलतनत मुक़र्रर किया गया है और इस की वफ़ादारी, फ़िरासत और पुख़्ता-कारी पर सलतनत ने एतिमाद किया है तब ही तो ज़मामे सलतनत उस के हाथ में दी है। फिर उस की सायब तदबीरी और मुआमला फहमी को पसेपुश्त डाल कर एक चौकीदार के इंतेख़ाब और राय को सही समझ लेना नामुनासिब अमर है।

यही हाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इंतेख़ाब का था। इस वक़्त आपके पास 70-80 साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो मौजूद थे जिनमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे परंतु इन सब में से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी रिफ़ाक़त के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का ही इंतेख़ाब किया। इस में रहस्य क्या है? बात यह है कि :

नबी ख़ुदा तआला की आँख से देखता है और इस का फ़हम अल्लाह तआला ही की तरफ़ से आता है। इस लिए अल्लाह तआला ने ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कशफ़ और इलहाम से बता दिया कि इस काम के लिए सबसे बेहतर और मौज़ूं हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो हैं।

फ़रमाते हैं .. उद्देश्य अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हुए। यह वक़्त ख़तरनाक आज़माईश का था।" फ़रमाते हैं ".. उद्देश्य हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूरा साथ दिया और एक ग़ार में जिस को ग़ार-ए-सौर कहते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जा छुपे। शरीर कुफ़्फ़ार जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कष्ट देने के लिए मंसूबे कर चुके थे तलाश करते हुए इस ग़ार तक पहुंच गए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ की कि अब तो यह बिल्कुल सिर पर ही आ पहुंचे हैं और अगर किसी ने ज़रा भी नीचे निगाह की तो वह देख लेगा और हम पकड़े जाऐंगे। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا (तौबा : 40) कुछ ग़म न खाओ अल्लाह तआला हमारे साथ है। इस लफ़्ज़ पर ग़ौर करो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने साथ मिलाते हैं। इसलिए फ़रमाया। اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا। مَعَنَا में आप दोनो शरीक हैं। अर्थात अल्लाह तआला तेरे और मेरे साथ है।

अल्लाह तआला ने एक पल्ला पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और दूसरे पर हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को रखा है।"

तराज़ू के दो पलड़े होते हैं एक पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रखा। दूसरे पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को रखा। उस वक़्त दोनो इबतेला मे हैं क्योंकि यही वह मुक़ाम है जहां से या तो इस्लाम की बुनियाद पड़ने

वाली है या ख़ातमा हो जाने वाला है

दुश्मन ग़ार पर मौजूद हैं और मुख़्तलिफ़ किस्म की राय ज़नियाँ हो रही हैं। कुछ कहते हैं कहा सिगार की तलाशी करो क्योंकि निशान पैर के यहां तक ही आकर ख़त्म हो जाता है .. लेकिन उनमें से बाअज़ कहते हैं कि यहां इन्सान का गुज़र और दख़ल कैसे होगा? मकड़ी ने जाला तना हुआ है। कबूतर ने अंडे दिए हुए हैं। इस किस्म की बातों की आवाज़ें अंदर पहुंच रही हैं और आप बड़ी सफ़ाई से उनको सुन रहे हैं। ऐसी हालत में दुश्मन आए हैं कि वे ख़ातमा करना चाहते हैं और दीवाने की तरह बढ़ते आए हैं लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कमाल शुजाअत को देखो कि दुश्मन सिर पर है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने रफीक-ए-सादिक़ सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़रमाते हैं ۔لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا। ये शब्द बड़ी सफ़ाई के साथ ज़ाहिर करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़बान ही से फ़रमाया क्योंकि ये आवाज़ को चाहते हैं। इशारा से काम नहीं चलता। बाहर दुश्मन मश्वरा कर रहे हैं और अंदर ग़ार में ख़ादिम-ओ-मख़दूम भी बातों में लगे हुए हैं। इस अमर की परवाह नहीं की गई कि दुश्मन आवाज़ सुन लेंगे। यह अल्लाह तआला पर कमाल ईमान और मार्फ़त का सबूत है। ख़ुदा तआला के वादों पर पूरा भरोसा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शुजाअत के लिए तो यह नमूना काफ़ी है। ..अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की शुजाअत के लिए एक दूसरा गवाह इस वाक़िया के सिवा और भी है।"

फ़रमाते हैं : "जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रहलत फ़रमाई और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो तलवार खींच कर निकले कि अगर कोई कहेगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देहांत फ़रमाया है तो मैं उसे क़तल कुर्दोंगा। ऐसी हालत में हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने बड़ी जुर्रत और दिलेरी से कलाम किया और खड़े हो कर ख़ुतबा पढ़ा। مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आले इमरान : 145) अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी अल्लाह तआला के एक रसूल ही हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले जिस क़दर नबी हो गुज़रे हैं। सबने वफ़ात पाई। इस पर वह जोश मे बढ़ा। इस के बाद बादिया नशीन एराब मुर्तद हो गए। ऐसे नाज़ुक वक़्त की हालत को हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने यूं ज़ाहिर है फरमाया है

पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल का देहांत हो चुका है और बाअज़ झूठे मुद्दई नबुव्वत के पैदा हो गए हैं और बाज़ों ने नमाज़ें छोड़ दीं और रंग बदल गया है। ऐसी हालत में और इस मुसीबत में मेरा बाप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़लीफ़ा और जांनशीन हुआ। मेरे बाप पर ऐसे ऐसे गम आए कि अगर पहाड़ों पर आते तो वह भी धवस्त हो जाते।

अब ग़ौर करो कि मुश्किलात के पहाड़ टूट पड़ने पर भी हिम्मत और हौसला को नहीं छोड़ना यह किसी मामूली इन्सान का काम नहीं। यह इस्तक़ामत सिदक़ ही को चाहती थी और सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने ही दिखाई। संभव नहीं था कि कोई दूसरा इस ख़तरा को सँभाल सकता। समस्त साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त मौजूद थे। किसी ने नहीं कहा कि मेरा हक़ है। वे देखते थे कि आग लग चुकी है। इस आग में कौन पड़े। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस हालत में हाथ बढ़ा कर आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत की और फिर सब ने एक के बाद एक बैअत कर ली। यह उनका सिदक़ ही था कि इस फ़ित्ना को दूर किया और उन मूज़ियों को हलाक किया। मुसैलमा के साथ एक लाख आदमी था और इस के मसायल इबाहत के मसायल थे। लोग उसकी इबाहती बातों को देख देख कर उस के मज़हब में शामिल होते जाते थे लेकिन ख़ुदा तआला ने अपनी मय्यत का सबूत दिया और सारी मुश्किलात को आसान कर दिया।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 374 से 379 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप एक जगह फ़रमाते हैं

"मैं तो यह जानता हूँ कि कोई शख़्स मोमिन और मुस्लमान नहीं बन सकता जब तक अबू बकर, उमर, उस्मान, अली रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन का सा रंग पैदा न हो। वे दुनिया से मुहब्बत नहीं करते थे बल्कि उन्होंने अपनी ज़िंदगियां ख़ुदा तआला की राह में वक़्फ़ की हुई थीं।"

(लैक्चर लुधियाना,रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 294)

फिर फ़रमाया अल्लाह की क़सम सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] ख़ुदा का वह मर्द हैं जिन्हें अल्लाह तआला की ओर से विशिष्ट उपाधियाँ प्रदान की गईं और अल्लाह ने उन के लिए यह गवाही दी कि वे विशेष चुने हुए लोगों में से हैं और अपने आपके साथ को आप[रज़ि॰] की ओर सम्बद्ध किया हो तथा आप की प्रशंसा और गुणगान किया और आप के महत्त्व को जाना और यह संकेत किया कि आप ऐसे व्यक्ति हैं कि जिन्हें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई पसन्द न आई। हां आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त अन्य परिजनों और निकट संबंधियों की जुदाई पर आप राज़ी हो गए। आप ने अपने आक़ा को प्राथमिकता दी और उनकी ओर दौड़े चले आए फिर पूर्ण इच्छा के साथ आप ने स्वयं को मौत के मुंह में डाल दिया और प्रत्येक तामसिक इच्छाओं को आप ने अपने मार्ग से हटा दिया। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप को अपनी मित्रता के लिए बुलाया तो सहमति में लबैक (मैं उपस्थित हूं) कहते हुए उठ खड़े हुए और जब क़ौम ने हज़रत (मुहम्मद) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निकालने का इरादा किया तो बुज़ुर्ग और सर्वश्रेष्ठ शक्तिमान, प्रतापी अल्लाह के प्रेमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप के पास आए और फ़रमाया-मुझे आदेश दिया गया है कि मैं हिजरत (प्रवास) करूं और तुम मेरे साथ हिजरत करोगे और हम इकट्ठे इस बस्ती से निकलेंगे। तो इस पर हज़रत सिद्दीक़[रज़ि॰] ने अल्हम्दुलिल्लाह पढ़ा कि ऐसे कठिन समय में अल्लाह ने उन्हें मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथी बनने का सौभाग्य प्रदान किया। वे पहले ही से नबी मज़्लूम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सहायता के प्रतीक्षक थे। यहां तक कि जब नौबत यहां तक पहुंच गई तो आप[रज़ि॰] ने पूर्ण गंभीरता और अंजाम से लापरवाह हो कर चिन्ता एवं शोक में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दिया और क़ातिलों के क़त्ल के षडयन्त्र से भयभीत न हुए। अतएव आप की श्रेष्ठता स्पष्ट और सुदृढ़ और स्पष्ट आदेश से सिद्ध है और आप की बुज़ुर्गी ठोस तर्क से स्पष्ट है और आप की सच्चाई प्रकाशमान दिन की तरह चमकदार है। आपने आख़िरत की नेमतों को पसंद किया और दुनिया के ऐश व आराम को त्याग दिया। दूसरों में से कोई भीआप[रज़ि॰] की इन ख़ूबियों तक नहीं पहुंच सकता। यदि तुम यह पूछो कि अल्लाह ने ख़िलाफ़त के सिलसिले के प्रारंभ के लिए आप को क्यों प्रधानता दी और इस में मेहरबान ख़ुदा की क्या हिकमत थी? तो जानना चाहिए कि अल्लाह ने यह देखा कि हज़रत सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] एक ग़ैर मुस्लिम क़ौम में पूर्ण स्वस्थ दिल के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए हैं और ऐसे समय में ईमान लाए जब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिल्कुल अकेले थे और बहुत घोर उपद्रव था। तो हज़रत सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] ने इस ईमान लाने के बाद भिन्न-भिन्न प्रकार का अपमान और बदनामी देखी तथा क़ौम, खानदान, कबीले, दोस्तों और भाई बन्धुओं की डांट-डपट देखी। कृपालु ख़ुदा के मार्ग में आप को कष्ट दिए गए और आप को उसी प्रकार मातृ भूमि से निकाल दिया गया जिस प्रकार जिन्नों तथा इन्सानों के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को निकाला गया था। आपने शत्रुओं की ओर से लानत-मलामत देखी, आप ने ख़ुदा के दरबार में अपने माल और जान से जिहाद किया। आप सम्मान और नेमतों में पोषण पाने के बावजूद साधारण लोगों के समान जीवन व्यतीत करते थे। आप ख़ुदा के मार्ग में (वतन) से निकाले गए, आप ख़ुदा के रास्ते में सताए गए, आप ने ख़ुदा के मार्ग में अपने माल से जिहाद किया और धन-दौलत रखने के बाद आप फ़क़ीरों और दरिद्रों की तरह हो गए। अल्लाह ने यह इरादा किया कि आप को गुज़रे हुए दिनों का प्रतिफल प्रदान करे। और जो आप के हाथ से निकल गया उस से उत्तम बदला दे और ख़ुदा की प्रसन्नता चाहने के लिए जिन कष्टों से आप का सामना हुआ उनका बदला आप पर प्रकट करे और अल्लाह उपकार करने वालों के प्रतिफल को कभी नष्ट नहीं करता। इसलिए आपके रब्ब ने आप को ख़लीफ़ा बना दिया और आप के लिए आप की चर्चा को बुलन्द किया तथा आप को सांत्वना दी और अपने फ़ज़्ल (कृपा) और रहम (दया) से सम्मान प्रदान किया और आप को अमीरुलमोमिनीन (मोमिनों का अमीर) बना दिया।

(सिर्रुलख़िलाफ़त (अनुवादक) पृष्ठ 63 से 66)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "यह अक़ीदा ज़रूरी है कि हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत फ़ारूक़ उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ू-नूरेन रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो। सब के सब वाक़ई तौर पर दीन में अमीन थे।

अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो इस्लाम के आदम-ए-सानी हैं और ऐसा ही हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो अगर देन में सच्चे अमीन न होते तो आज हमारे लिए मुश्किल था जो क़ुरआन शरीफ़ की किसी एक आयत को भी मिंजानिबुल्लाह बता सकते।"

(मकतूबे अहमद भाग 2 पृष्ठ 151 मकतूब नंबर 2 मकतूब बनाम हज़रत ख़ान साहब मुहम्मद अली ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो)

फिर एक जगह आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इस्लाम के आदम-सानी हैं

उस ज़माना में भी मुसैलमा ने इबाहती रंग में लोगों को जमा कर रखा था। ऐसे वक़्त में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा हुए तो इन्सान ख़्याल कर सकता है कि किस क़दर मुश्किलात पैदा हुई होंगी। अगर वह क़वी दिल न होता और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ईमान का रंग उसके ईमान में न होता तो बहुत ही मुश्किल पड़ती और घबरा जाता लेकिन सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हमसाया था। हमसाया था यानी जिस तरह आपका साया था इसी तरह वह थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ का असर इस पर पड़ा हुआ था और दिल नूर-ए-यक़ीन से भरा हुआ था। इसलिए वह शुजाअत और इस्तक़लाल दिखाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उसकी नज़ीर मिलनी मुश्किल है। उनकी ज़िंदगी इस्लाम की ज़िंदगी थी। यह ऐसा मसला है कि इस पर किसी लंबी बेहस की हाजत ही नहीं। इस ज़माना के हालात पढ़ लो और फिर जो इस्लाम की ख़िदमत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने की है इस का अंदाज़ा कर लो। मैं सच्च कहता हूँ कि अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो इस इस्लाम के लिए आदम-ए-सानी हैं। मैं यक़ीन रखता हूँ कि अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का वजूद न होता तो इस्लाम भी न होता। अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का बहुत बड़ा एहसान

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 19 January 2023 Issue No. 3

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

है कि उसने इस्लाम को दुबारा क़ायम किया। अपनी क़ुव्वत-ए-ईमानी से समस्त बाग़ीयों को सज़ा दी और अमन को क़ायम कर दिया। इसी तरह पर जैसे ख़ुदा तआला ने फ़रमाया और वाअदा किया था कि मैं सच्चे ख़लीफ़ा पुरअमन को क़ायम करूँगा। यह पेशगोई हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िलाफ़त पर पूरी हुई और आसमान ने और ज़मीन ने अमली तौर पर शहादत दे दी। अतः यह सिद्दीक़ की तारीफ़ है कि इस में सिदक़ इस मर्तबा और कमाल का होना चाहिए। नज़ाइर से मसाइल बहुत जल्द हल हो जाते हैं।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 380-381 ऐडीशन 1984 ई।)

फिर आप फ़रमाते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात पर हज़ारों आदमी मुर्तद हो गए हालाँकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में तकमील शरीयत हो चुकी थी। यहां तक इस इर्तिदाद की नौबत पहुंची कि सिर्फ दो मस्जिदें रह गईं जिनमें नमाज़ पढ़ी जाती थी। बाक़ी किसी मस्जिद में नमाज़ ही नहीं पढ़ी जाती थी। ये वही लोग थे जिनको अल्लाह तआला फ़रमाता है। قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا (अल् हुजरात : 15) परंतु अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़रीया दुबारा इस्लाम को क़ायम किया और वह आदम-ए-सानी हुए।

मेरे नज़दीक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद बहुत बड़ा एहसान इस उम्मत पर हज़रत अबू बकर रज़ी अल्लाह का है क्योंकि उनके ज़माना में चार झूठे पैग़ंबर हो गए। मुसैलमा के साथ एक लाख आदमी हो गए थे और उनका नबी उनके दरमयान से उठ गया था परंतु ऐसी मुश्किलात पर भी इस्लाम अपने मर्कज़ पर क़ायम हो गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को तो बात बनी बनाई मिली थी। फिर वे इस को फैलाते गए। यहां तक कि अरब के इर्द गिर्द से इस्लाम निकल कर शाम-ओ-रुम तक जा पहुंचा और ये देश मुस्लमानों के क़बज़ा मे आगए।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो वाली मुसीबत किसी ने नहीं देखी न हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने न हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने और न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने।" (मल् फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 277-278 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप फ़रमाते हैं कि "जो ख़ुदा तआला के लिए ज़लील हो वही अंजाम कार इज़्ज़त-ओ-जलाल का तख़तनशीं होगा। एक अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ही को देखो जिसने सबसे पहले ज़िल्लत क़बूल की और सबसे पहले तख़्त नशीन हुआ।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 41 ऐडीशन 1984 ई.)

फ़रमाया "क्या दुनिया में ऐसी कम मिसालें और नज़ीरें हैं कि जो लोग उस की राह में क़तल किए गए। हलाक किए गए उनके ज़िंदा जावेद होने का सबूत ज़र्रा ज़र्रा ज़मीन में मिलता है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ही देख लो कि सबसे ज़्यादा अल्लाह की राह में बर्बाद किया और सबसे ज़्यादा दिया गया। इसलिए तारीख-ए-इस्लाम में पहला ख़लीफ़ा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ही हुआ।"फ़रमाया

"बहुत का यह भी ख़्याल होगा कि क्या हम इन्क़िता अल्लाह की ओर कर के अपने आपको तबाह कर लेवें? परंतु ये उनको धोखा है। कोई तबाह नहीं होगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देख लो। उसने सब कुछ छोड़ा फिर वही सबसे अव्वल तख़्त पर बैठा।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 19 हाशिया ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप फ़रमाते हैं : जहां तक तुम पर इस तर्क की स्पष्टता के लिए विवरण का संबंध है तो हे बुद्धि और श्रेष्ठता रखने वालो! जान लो कि अल्लाह ने समस्त मुसलमान पुरुषों तथा स्त्रियों से इन आयतों में यह वादा किया है कि वह उनमें से अपने फ़ज़्ल और रहम (कृपा और दया) से कुछ मोमिनों को अवश्य ख़लीफ़ा बनाएगा तथा उन के भय को अवश्य अमन की हालत में बदल देगा। इस बात का सर्वांगपूर्ण तौर पर चरितार्थ (मिस्दाक़) हम हज़रत सिद्दीक़ (अकबररज़ि॰) की ख़िलाफ़त को ही पाते हैं। क्योंकि जैसा अन्वेषण कर्ताओं से यह बात छुपी हुई नहीं कि आप की ख़िलाफ़त का समय भय और कष्टों का समय था। अतः जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्वर्गवास हुआ तो इस्लाम और मुसलमानों पर संकट टूट पड़े। बहुत से मुनाफ़िक़ मुर्तद हो गए और मुर्तदों की ज़बानें लम्बी हो गईं और झूठ गढ़ने वालों के एक समूह ने नुबुव्वत का दावा कर दिया और अधिकतर ख़ानाबदोश उनके चारों ओर एकत्र हो गए, यहां तक कि मुसैलिमा कज़्ज़ाब के साथ एक लाख के लगभग मूर्ख और दुष्चरित्र लोग मिल गए और फ़ित्ने भड़क उठे तथा संकट बढ़ गए और आफ़तों (विपदाओं) ने दूर और निकट को घेर लिया और मोमिनों पर एक भयंकर भूकम्प छा गया। उस समय समस्त लोग आज़माए गए और भयावह तथा होश उड़ाने वाली परिस्थितियां प्रकट हो गईं और मोमिन ऐसे विवश थे कि जैसे उनके दिलों में आग के अंगारे दहकाए गए हों या वे छुरी से ज़िब्ह कर दिए गए हों। कभी तो वे ख़ैरुलबरीयः (मख़लूक में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वियोग (जुदाई) और कभी उन फ़ित्नों के कारण जो जलाकर भस्म कर देने वाली आग के रूप में प्रकट हुए थे रोते। अमन का किंचिनमात्र तक न था। फ़ित्नः फैलाने वाले गन्दगी के ढेर पर उगी हुई हरियाली की तरह छा गए थे। मोमिनों का भय और उनकी घबराहट बहुत बढ़ गई थी और दिल भय और बेचैनी से भर गए थे। ऐसे (संवेदनशील) समय में (हज़रत) अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु समय के शासक और (हज़रत) ख़ातमुन्नबिय्यीन के ख़लीफ़ा बनाए गए। मुनाफ़िकों, काफ़िरों और मुर्तदों के जिन रवैयों और चाल चलन को आपने देखा उन से आप रंज-व-ग़म में डूब गए और आप इस प्रकार रोते जैसे सावन की झड़ी लगी हो और आप के आंसू बहते हुए झरने की तरह बहने लगे और आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) (अपने) अल्लाह से इस्लाम तथा मुसलमानों की भलाई की दुआ मांगते।

हज़रत) आइशा रज़ियल्लाहु अनहा से रिवायत है। आप फ़रमाती हैं कि) जब मेरे पिता ख़लीफ़ा बनाए गए और अल्लाह ने उन्हें अमारत के पद पर आसीन किया तो ख़िलाफ़त के प्रांरभ में ही आप ने हर ओर से उपद्रवों को लहरें मारता हुआ तथा नुबुव्वत के झूठे दावेदारों की दौड़-धूप और मुनाफ़िक मुर्तदों की बग़ावत (विद्रोह) को देखा और आप पर इतने कष्ट टूटे कि यदि वे पर्वतों पर टूटते तो वे पृथ्वी में अन्दर घुस जाते तथा गिरकर तुरन्त चूर-चूर हो जाते परन्तु आप को रसूलों जैसा सब्र प्रदान किया गया, यहां तक कि अल्लाह की सहायता आ पहुंची और झूठे नबी क़त्ल और मुर्तद मार दिए गए। फ़ित्ने दूर कर दिए गए और कष्ट छट गए तथा मामले का फैसला हो गया और ख़िलाफ़त का मामला सुदृढ़ हुआ तथा अल्लाह ने मोमिनों को संकट से बचा लिया और उनकी भय की स्थिति को अमन में बदल दिया और उनके लिए उनके धर्म को वैभव (शानो शौकत) प्रदान किया और एक संसार को सच पर स्थापित कर दिया और उपद्रवियों के चेहरे काले कर दिए और अपना वादा पूरा किया तथा अपने बन्दे (हज़रत अबूबक्र) सिद्दीक़रज़ि॰ की सहायता की और उद्दण्ड सरदारों तथा बुतों को नष्ट और बरबाद कर दिया तथा काफ़िरों के दिलों में ऐसा रोब डाल दिया कि वे पराजित हो गए और (अन्ततः) उन्होंने रुजू करके (लौटकर) तौबा की और यही ख़ुदा का वादा था वह सब सच्चों से बढ़कर सच्चा है। अतः विचार कर कि किस प्रकार खिलाफ़त का वादा अपनी पूर्णा अनिवार्यताओं तथा लक्षणों के साथ (हज़रत अबू बक्र) सिद्दीक़रज़ि॰ के अस्तित्व में पूरा हुआ।

फ़रमाते हैं : .. विचार करो कि आप के ख़लीफ़ा होने के समय मुसलमानों की क्या हालत थी। इस्लाम संकटों के कारण आग से जले हुए व्यक्ति के समान (संवेदनशील हालत में) था। फिर अल्लाह ने इस्लाम को उसकी शक्ति लौटा दी और उसे गहरे कुएं से निकाला तथा नुबुव्वत के झूठे दावेदार कष्टदायक अज़ाब से मारे गए और मुर्तद चौपायों की तरह मार दिए गए तथा अल्लाह ने मोमिनों को उस भय से जिसमें वे मुर्दों के समान थे अमन प्रदान किया। इस कष्ट के दूर होने के बाद मोमिन प्रसन्न होते थे और (हज़रत अबू बक्र) सिद्दीकरज़ि॰ को मुबारकबाद देते और मर्हबः (बहुत खूब) कहते हुए उन से मिलते थे। आप की प्रशंसा करते और समस्त स्वामियों के स्वामी (ख़ुदा) के दरबार से आप के लिए दुआएं करते थे। आपके मान-सम्मान के शिष्टाचारों का पालन करने के लिए लपकते थे और उन्होंने आप के प्रेम को अपने दिल की गहराई में दाखिल कर लिया और वे अपने समस्त मामलों में आप का अनुकरण करते थे और वे आपके आभारी थे। उन्होंने अपने दिलों को रोशन और चेहरों को हरा-भरा किया तथा वे प्रेम और मुहब्बत में बढ़ गए और पूर्ण प्रयास एवं परिश्रम से आप का आज्ञापालन किया। वे आप को एक मुबारक अस्तित्व और नबियों को समान समर्थन प्राप्त समझते थे। और यह सब कुछ (हज़रत अबू बक्र) सिद्दीकरज़ि॰ की सच्चाई और गहरे विश्वास के कारण से था। (सिर्रुलख़िलाफ़त (अनुवादक पृष्ठ 47 से 51)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद इस्लाम की क्या हालत थी और इस में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़सायल का तज़करा करते हुए मज़ीद फ़रमाया : "आप नबी तो न थे किन्तु आप में रसूलों की शक्तियां मौजूद थी। आपरज़ि॰ की इस सच्चाई के कारण से ही इस्लाम का चमन अपनी पूरी सुन्दरताओं की ओर लौट आया और तीरों के आघात के पश्चात् शोभायमान और हरा भरा हो गया और उसके नाना प्रकार के मनोरम फूल खिले और उसकी शाखाएं धूल एवं मिट्टी से साफ़ हो गईं जबकि इस से पहले उसकी हालत ऐसे मुर्दे के समान हो गई थी जिस पर रोया जा चुका हो और (उसकी हालत) सूखा ग्रस्त (दुर्मिक्ष ग्रस्त) जैसी और कष्ट के शिकार की भांति और ज़िब्ह किए गए ऐसे जानवर के समान जिस के मांस को टुकड़े-टुकड़े कर दिया हो, हो गई थी। और (उसकी हालत) भिन्न-भिन्न प्रकार की दौड़-

शेष पृष्ठ 09 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad